मार्च-अप्रैल १९९५

वर्ष : ५
अंक : २९

ऋषि प्रसाद

पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

वर्ष में दो बार सूरत आश्रम में विद्यार्थी शिविर। तापी तट पर विद्यार्थियों को तेजस्वी जीवन की योगयुक्तियाँ बताते हुए पूज्यश्री।

लुधियाना (पंजाब) में सत्संग सरिता में अवगाहन कर पंडाल से बाहर निकलते श्रद्धालु भक्तजन। सभी के मुख पर शांति...प्रसन्नता...सौम्यता...मधुरता...

प्रकाशा–खापर मार्ग पर (जि. धुले) पूज्यश्री का स्वागत केदारेश्वर खांडसारी मिल निम्बोर के श्रमिकों ने किया।

पूर्णिमा गुरुदर्शन व्रतधारियों की बड़ौदा से अहमदाबाद आश्रम की ओर पदयात्रा।

श्री यो. वे. से. समिति, झालोद (पंचमहाल, गुज.) द्वारा संकीर्तनयात्रा।

निम्बोरा फाटा पर निर्झर (जि. सूरत) समिति द्वारा पूज्यश्री का खापर जाते समय मार्ग में भव्य स्वागत का दृश्य।

पानी की प्याऊ के साथ सत्साहित्य की ज्ञान–प्याऊ। संत श्री आसारामजी आश्रम, राजकोट (गुज.) दिसम्बर ९४ का मेला।

गाजीपुर नवी वसाहत अगरवाड़ा प्रा. शाला में नारी उत्थान आश्रम की बहनों द्वारा सत्संग।

ऋ
वर्ष : ५
अंक : २९
मार्च-अप्रैल
सम्पादक :
शुल्क वा
आजी
परदेश में व
आजी
कार्यालय
'ऋषि प्रसाद
श्री योग वेद
संत श्री आ
साबरमती,
फोन : ४८
परदेश में शु
Internationa
8 Williams
Park Ridge
Phone : (2
टाईप सेटींग
प्रकाशक औ
श्री योग वेद
संत श्री आस
साबरमती, अ
भार्गवी प्रिन्ट
छपाकर प्रक
Subject to

ऋषि प्रसाद

द्विमासिक

वर्ष : ५

अंक : २९

मार्च-अप्रैल १९९५

सम्पादक : के. आर. पटेल

शुल्क वार्षिक : रू. २५

आजीवन : रू. २५०/-

परदेश में वार्षिक : US $ 15 (डॉलर)

आजीवन : US $ 150 (डॉलर)

कार्यालय

'ऋषि प्रसाद'

श्री योग वेदान्त सेवा समिति

संत श्री आसारामजी आश्रम

साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५

फोन : ४८६३१०, ४८६७०२.

परदेश में शुल्क भरने का पता :

International Yoga Vedanta Seva Samiti

8 Williams Crest,

Park Ridge, N. J. 07656 U.S.A.

Phone : (201) - 930 - 9195

टाईप सैटींग : विनय प्रिन्टींग प्रेस

प्रकाशक और मुद्रक : के. आर. पटेल

श्री योग वेदान्त सेवा समिति,

संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा,

साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५. ने

भार्गवी प्रिन्टर्स, राणीप, अहमदाबाद में

छपाकर प्रकाशित किया ।

अनुक्रम

❀ 'ऋषि प्रसाद' ❀

हर दूसरे महीने की ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है ।

कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें ।

गाजीपुर नवी वसाहत अगरवाड़ा प्रा. शाला में नारी उत्थान आश्रम की बहनों द्वारा सत्संग ।

निम्बोरा फाटा पर निझ़र (जि. सूरत) समिति द्वारा पूज्यश्री का खापर जाते समय मार्ग में भव्य स्वागत का दृश्य ।

जीवन ऐसा बने...

बने अब जीवन ऐसा हमारा कि,
तर जाएँ भव से पाकर किनारा।
दया ऐसी कर दो ओ सद्गुरु दाता,
जन्में न जग में फिर से दोबारा ।।

भटकें न हम अंधे विषयों में दाता,
ऐसी हमें अब शक्ति तुम देना ।
तुम्हारे ही चरणों में प्रीति रहे बस,
ऐसी हमें अपनी भक्ति तुम देना ।।

ये संसार खींच-खींच के बुला रहा है,
न लौटें अब ऐसा ही प्रण हो हमारा ।
बने आज जीवन ऐसा हमारा कि,
बह जाए जीवन में भक्ति की धारा ।।

ये विषयों की नदियाँ विकारों के सागर,
सता फिर रहे हैं ये फिर-फिर से आकर ।
बह हम गये तो तिर ना सकेंगे,
इतना उठा दो कि गिर ना सकें हम ।।

दे दो ओ गुरुवर शरण सहारा कि,
बह जाए जीवन में सत्संग की धारा ।
बने अब जीवन ऐसा हमारा कि,
जन्में न जग में फिर से दोबारा ।।

जब तक जियें हम तेरे रहें बस,
तेरे ही पथ पर चलते रहें हम ।
सेवा में तुम्हारी गर प्राण निकले तो,
हँसते हुए हो मरना भी प्यारा ।।

बने अब जीवन ऐसा हमारा कि,
तर जाएँ भव से पाकर किनारा ।
दया ऐसी कर दो ओ सद्गुरु दाता,
जन्में न जग में फिर से दोबारा ।।

गुरु मिल जाएँगे...

अज्ञान अंधकार हो,
प्रेम की बहार हो,
भक्त की पुकार हो,
गुरु मिल जाएँगे... गुरु मिल जाएँगे ।।

हृदय में भक्तिभाव हो,
कपट न दाव हो,
सत्संग की नाव हो,
भवसागर पार लगाएँगे... गुरु मिल जाएँगे ।।

साथ नामदान हो,
संकल्प महान हो,
पाना गर कल्याण हो,
तत्त्व गुरु समझाएँगे... गुरु मिल जाएँगे ।।

विनय के बोल हों,
भाव अनमोल हो,
समझ की तोल हो,
निज स्वरूप दिखाएँगे... गुरु मिल जाएँगे ।।

गुरुभक्ति का धन हो,
शिष्य का मन हो,
तीव्र लगन हो,
साक्षात्कार कराएँगे... गुरु मिल जाएँगे ।।

- गोपालदास चांडक
अकोला, महाराष्ट्र ।

ॐॐॐॐ
गी
प
सर्वोपनिषदो
पार्थोवत्स सु
सर्व उपनिष
श्रीकृष्ण हैं, अर्
दूध है और
उसको पीनेवा
उपनिषद
दोहन करने
श्रीकृष्ण अरण्य
रण में लाये
गुफा के योग
रूप से उन्हों
है। यज्ञवेदी प
होता था उस
मैदान में ला वि
गीतामृत के रू
का धर्म, गीत
ऐसा है कि
करता है। गी
में लाया जा
अपि चेदरि
सर्वं ज्ञानप्
यदि तू अ

पापों से मुक्ति

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः ।
पार्थोवत्स सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥

सर्व उपनिषद् रूपी गाय है, दोहने वाले गोपालनंदन श्रीकृष्ण हैं, अर्जुन रूपी बछड़ा है, गीतामृत रूपी महान दूध है और बुद्धिमान मनुष्य उसको पीनेवाला है ।

उपनिषद रूपी गायों का दोहन करने वाले गोपाल श्रीकृष्ण अरण्य की विद्या को रण में लाये हैं । एकांत और गुफा के योग को सार्वजनिक रूप से उन्होंने प्रगट किया है । यज्ञवेदी पर जो धर्म संपन्न होता था उस धर्म को युद्ध के मैदान में ला दिया है और उसे गीतामृत के रूप में जनसमाज में फैलाया है । गीता का धर्म, गीता की भक्ति और गीता का ज्ञान ऐसा है कि वह प्रत्येक समस्याओं का समाधान करता है । गीता का धर्म प्रत्येक अवस्था में आचरण में लाया जा सके ऐसा सरल और सुगम धर्म है ।

श्रीकृष्ण अरण्य की विद्या को रण में लाये हैं । एकान्त और गुफा के योग को सार्वजनिक रूप से उन्होंने प्रगट किया है । यज्ञवेदी पर जो धर्म संपन्न होता था उस धर्म को युद्ध के मैदान में ला दिया है और उसे गीतामृत के रूप में जनसमाज में फैलाया है ।

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥

यदि तू अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करनेवाला है, तो भी तू ज्ञानरूप नौका द्वारा निःसंदेह सम्पूर्ण पाप-समुद्र से भलीभाँति तर जायेगा ।

(श्रीमद् भगवद्गीता : ४.३६)

दुराचारी में दुराचारी और पापियों में भी सबसे महान् पापी हो वह भी गीता के ज्ञान रूपी नौका द्वारा पापरूप समुद्र से तर जायेगा । ऐसा नहीं कि मृत्यु के बाद वह तर जायेगा । यहीं उसको मुक्ति का अनुभव होगा । गीता जीवात्मा को समझा देती है कि तुम्हारा वास्तविक स्वरूप शुद्ध-बुद्ध-नित्य-आनंद स्वरूप है । पापी में पापी हो, महापापी हो, उसकी भी आत्मा उतनी ही पवित्र है जितनी संत-महापुरुषों की । पापी का मन पापयुक्त होता है । परन्तु मन-बुद्धि से अत्यंत परे ऐसे चैतन्य परमात्मा में अगर वह जग जाये तो उसका बेड़ा पार हो जाये ।

राजा जनक राज्य का कार्यभार संभालते थे । अष्टावक्र मुनि ने उनको तत्त्व का ज्ञान दिया था, केवल उपदेश नहीं । महापुरुष समर्थ थे और जनक अधिकारी थे । उपदेश के साथ उनका संकल्प भी था । इससे जो महापुरुषों का अनुभव था वही जनक का अनुभव बना । कथा करनेवाले महापुरुष सिद्ध पुरुष भी हों तो लोगों का कल्याण हो, ऐसा संकल्प करके फिर कथा करें । कथा के शब्द तो हम भूल जाते हैं फिर भी महापुरुषों के शुभ संकल्प हमको बहुत उन्नत कर देते हैं ।

श्रीकृष्ण का अर्जुन के लिए, शुकदेवजी का परीक्षित के लिए और अष्टावक्र मुनि का राजा जनक के लिए शुभ संकल्प था कि उनको ज्ञान हो । ऐसे कोई सत्पुरुष हों और सत्शिष्य मिल जाये तो हजारों जन्मों का काम एक जन्म में हो जाये । ज्ञान न हो तो भी सुना हुआ व्यर्थ नहीं जाता । सत्कर्म किये हों, कथा-सत्संग सुना हो, गुरुदीक्षा ली हो, गुरुनिर्दिष्ट

मार्ग से साधना की हो, तो वह साधना व्यर्थ नहीं जाती। इस जन्म में नहीं तो बाद के जन्मों में उसका प्रभाव जरूर पड़ता है और ऐसा करते-करते आत्मज्ञान हो जाता है।

भृगु ऋषि परब्रह्म परमात्मा में रमण करते थे। शुक्र नाम का ब्रह्मचारी उनकी सेवा करता था। गुरु की सेवा करने से अंतःकरण पावन होता है और पावन अंतःकरण में ध्यान करने की इच्छा होती है। शुक्र ध्यान का अभ्यास करता। साधना करते-करते उसे ध्यान में एक बार विश्वाची नाम की अप्सरा दिखी। शुक्र एकदम तुच्छ संसारी जीव भी न था और आत्मसाक्षात्कारी भी न था। अप्सरा के देदीप्यमान देह से आकर्षित होकर वह उसके पीछे चला और स्वर्गलोक में पहुँचा। देवताओं के पास ऐसी शक्ति होती है कि सामने वाला मनुष्य कहाँ से आया है, कौन है, किसलिए आया है यह सब वे जान सकते हैं। दूसरों के मन की बात भी वे जान सकते हैं। स्वर्ग के दूतों ने जाकर इन्द्रदेव से कहा कि भगवान भृगु ऋषि की सेवा करनेवाला ब्रह्मचारी शुक्र विश्वाची अप्सरा के सौन्दर्य से मोहित होकर उसके पीछे यहाँ तक आया है।

अपने आश्रम में भी एक साधक एक सप्ताह के लिए मौनमंदिर में बैठा। थोड़ी साधना करो तो ध्यान में बैठे हो तब अप्सरा तथा दूसरे विलक्षण दृश्य दिखते हैं। परंतु उसमें रुक नहीं जाना चाहिए। कथा में उसने बात सुनी थी कि यह सब माया है। चौथे-पाँचवे दिन उसे देदीप्यमान देहवाली एक अप्सरा दिखी। फिर छठवें दिन भी दिखी परंतु उस वक्त अप्सरा ने संकल्प से अपने शरीर पर से चमड़ी हटा ली। उसके अंदर तो माँस-मज्जा, हड्डियाँ, खून, मल-मूत्र भरे हुए शरीर के दर्शन हुए। साधक को तो नफरत हो गयी। तब अप्सरा ने कहा :

"बाहर के रूप को देखकर जो फँस जाता है उसे यह पता नहीं कि अंदर तो ऐसा सब होता है। तू तो समर्थ गुरु की शरण में है इसलिए बच गया है। अब बराबर साधना करना और लक्ष्यस्थान पर पहुँचना।"

इन्द्र ने देखा कि शुक्र का भले पतन हो गया लेकिन उसने ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु की सेवा की है। हम उसका सत्कार करें तो हमारी और स्वर्ग की पुण्याई बढ़े। इन्द्र ने शुक्र को अपने सिंहासन पर बिठाया और अर्घ्यपाद्य से पूजन किया। स्वर्ग में शुक्र ने विश्वाची अप्सरा के साथ गांधर्व विवाह किया और बहुत समय तक स्वर्ग में उसके साथ भोग भोगे। पुण्य क्षीण होने पर शुक्र ब्राह्मण के घर जन्मे और विश्वाची अप्सरा राजा के यहाँ जन्मी। वहाँ भी संयोगवशात् दोनों का विवाह हुआ। राजा ने राजपाट दे दिया और घर-जमाई बना लिया। ब्राह्मण पुत्र के रूप में जन्मे शुक्र ने राजकुमारी के साथ खूब भोग भोगे। किन्तु फिर मन में जागृति आयी और भोगों से ग्लानि हुई। भोग विलास तो दुःखदायी है, इसका भान हुआ। गुरुसेवा और भगवद्भजन का प्रभाव जाग्रत हुआ। जैसे हम किसी दुकान से तपेली में घी लाये हों और वह ठीक न लगा हो तो दुकानदार को वापस दे दें। तब दुकानदार घी को वापस डालता है फिर भी बर्तन में घी का चिकनापन तो रह ही जाता है। ऐसे ही शुक्र ने पुण्य किये और समाप्त हो गये किन्तु फिर भी पुण्य करने का स्वभाव था वह जाग उठा और दूसरे जन्म में वह तपस्वी हो गया। ऐसा करते-करते कितने ही जन्मों के बाद भृगु ऋषि के चरणों में पहुँचा और आत्मज्ञान पाकर मुक्ति पा गया। इस प्रकार सत्संग, सत्कर्म,

> दुराचारी में दुराचारी और पापियों में भी सबसे महान् पापी हो वह भी गीता के ज्ञानरूपी नौका द्वारा पापरूप समुद्र से तर जायेगा। ऐसा नहीं कि मृत्यु के बाद वह तर जायेगा। यहीं उसको मुक्ति का अनुभव होगा।

आत्मविचार किया हो, आत्मज्ञान की बातें सुनी हों तो वे व्यर्थ नहीं जातीं। उनके संस्कार कभी न कभी जागृत हो जाते हैं और मनुष्य को भगवत्प्राप्ति की ओर ले जाते हैं।

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥

पापी में पापी, दुराचारियों में भी सबसे अधिक दुराचारी मनुष्य भी ज्ञान रूपी नौका द्वारा इस संसार सागर से तर जाता है। व्यवहार काल में भी ज्ञान का सहारा लिया हो तो बेड़ा पार हो जायेगा। मन जैसा कहे वैसा करते जायें उसकी अपेक्षा थोड़ा ज्ञानपूर्वक विचार करें तो बहुत लाभ हो। मन कहे कि चलो, जरा बीड़ी की दो फूँक मार लूँ या एकाध प्याली पी लूँ। परंतु उस समय मन को समझाना पड़ता है कि बीड़ी फूँकने से या प्याली पीने से क्या होगा ? आज तक उसमें से क्या मिला ? पैसे गँवाये और शरीर को रोगी बनाया। निकोटीन और अल्कोहल का जहर शरीर में भरने से क्या फायदा ? थोड़ी सौंफ, अजवाईन और सेंधव नमक लेकर उसमें नींबू निचोड़कर सेंक लो। जब बीड़ी फूँकने की या तंबाकू खाने की इच्छा हो तब इसका मुखवास की तरह उपयोग करो तो तुम्हारा खून भी सुधरेगा और फेफड़ों की शक्ति भी बढ़ेगी।

साधक एक सप्ताह के लिए मौनमंदिर में बैठा। चौथे-पाँचवे दिन उसे देदीप्यमान देहवाली एक अप्सरा दिखी।

कमजोर मन के मनुष्य कहते हैं कि व्यसन नहीं छूटता। छूटे कैसे नहीं ? अगर हम ठान लें तो क्या नहीं हो सकता ? परंतु मन को छूट देने से वह हम पर जोर करने लगता है। यदि मन कहे कि शराब पीना है तो उसे बताओ कि पहले इस गटर के पानी से भरी प्याली पी ले, फिर शराब दूँगा। हम जरा कठोर रहें तो मन सीधे रास्ते पर चलने लगेगा। परंतु मन जो माँगे वह करने लगें तो मुश्किल होती है और वह उसका इच्छित करवाता है।

सत्संग, सत्कर्म, आत्मविचार किया हो, आत्मज्ञान की बातें सुनी हो तो वे व्यर्थ नहीं जाती। उनके संस्कार कभी न कभी जाग्रत हो जाते हैं और मनुष्य को भगवत्प्राप्ति की ओर ले जाते हैं।

बम्बई के एक सेठ थे। उनके यहाँ नौकरी करते पेढ़ी के मुनीम ने कहा : "सेठजी ! अब दिवाली नजदीक आ गई है। नये वर्ष से मेरा वेतन जो नौ सौ रूपये हैं उसे पंद्रह सौ कर दीजिए।"

सेठ ने कहा : "नौ सौ के सीधे पंद्रह सौ ?"

मुनीम ने कहा : "हाँ, महँगाई भी खूब बढ़ गई है न !"

सेठ ने कहा : "क्यों इतने रौब से बोलता है ?"

मुनीम ने कहा : "रोब से तो बोलना ही पड़े न ! पंद्रह सौ कर दो तो रहूँ नहीं तो जाऊँ। आपकी मर्जी !"

सेठ ने कहा : "निकल जा, पंद्रह सौ कहीं दिये जाते होंगे ?"

मुनीम ने कहा : "मैं तो निकल जाऊँगा परन्तु फिर तुम्हारी पेढ़ी भी निकल जायेगी।"

"अरे, ऐसा क्यों बोलता है ?"

"सेठजी ! मैं तुम्हारा बहीखाता लिखने वाला हूँ। एक नंबर और दो नंबर का जो इधर-उधर कराया है, वह सब जानता हूँ। मैं इन्कमटेक्स ऑफिसर के पास जाऊँ तो फिर मुझे कोई दोष न देना।"

सेठ गिड़गिड़ाते हुए बोले : "अरे भाई ! ऐसा तो कहीं होता होगा ? तुम पेढ़ी के पुराने, विश्वासपात्र व्यक्ति हो। पंद्रह सौ नहीं सोलह सौ वेतन ले लेना पर यहीं रहना।"

जैसे सेठ की कमजोर नस को मुनीम जान

गया था, उसने सेठ के पास अपना सोचा हुआ ही करवाया । वैसे ही मन के पास से यदि गलत काम करवाते हैं तो मन पुष्ट हो जाता है और अपना इच्छित कार्य हमारे से करवाता है । नौकर सेठ हो जाता है और सेठ को गिड़गिड़ाना पड़ता है । उसी प्रकार मन नौकर है किन्तु मन जैसा नचाता है वैसा सब नाचते रहते हैं । यदि वहाँ ज्ञान का उपयोग करें तो उसके चुंगल से छूटा जा सकता है । यदि सेठ ने मुनीम को थोड़े समय रखकर उसके पास से सब व्यवस्थित काम करा लिया होता तो फिर उसे निकाल सकता था । वैसे ही इस मन रूपी मुनीम के पास से सब जानकर जितना जरूरी लगे, जितना ज्ञानयुक्त और अनुकूल हो उसे सहयोग दो और प्रतिकूल हो उसे त्याग दो । अच्छे कार्यों में ढील न दो और खराब कार्य करने का विचार आये तो उसमें विलम्ब करो । परंतु हम अच्छे कार्यों में तो विलम्ब करते हैं और खराब हो तो तत्काल 'धमाधम' कर डालते हैं । इसलिए मन पुष्ट हो जाता है और हम अपने आपको कमजोर मान लेने की भूल करते हैं । इसी कारण हम अच्छा करने की इच्छा होते हुए भी नहीं कर सकते ।

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥

पापी में पापी मनुष्य भी प्रायश्चित्त करे कि इस पाप से मेरी आत्मा डंकती है, दुःखी होती है । अब मैं इस पाप से बचूँगा । आर्तभाव से भगवान से प्रार्थना करे, भगवद्प्राप्त महापुरुषों की शरण में जाये । जहाँ भगवद्भजन, ध्यान और हरिचर्चा होती हो वहाँ जाकर प्रायश्चित्त करके अपने हृदय को शुद्ध किया जा सकता है ।

> आत्म-प्राप्ति के राही के लिए महापुरुषों की सेवा अत्यंत कल्याणकारी है । बिना सेवा के ब्रह्मविद्या मिलती या फलीभूत नहीं होती ।

गुरुभक्तियोग

१. गुरुभक्तियोग अमरत्व, शाश्वत सुख, मुक्ति, पूर्णता, अखूट आनन्द और चिरंतन शान्ति देनेवाला है ।

२. महान योगी गुरु के आश्रय में उच्च आध्यात्मिक स्पन्दनोंवाले शान्त स्थान में रहो । फिर उनकी निगरानी में गुरुभक्तियोग का अभ्यास करो । तभी आपको गुरुभक्तियोग में सफलता मिलेगी ।

३. गुरुभक्तियोग का मुख्य सिद्धान्त ब्रह्मनिष्ठ गुरु के चरणकमल में बिनशरती आत्मसमर्पण करना ही है ।

४. गुरुभक्तियोग की फिलासफी के मुताबिक गुरु एवं ईश्वर एकरूप हैं । अतः गुरु के प्रति सम्पूर्ण आत्मसमर्पण करना अत्यंत आवश्यक है ।

५. गुरु के प्रति सम्पूर्ण आत्मसमर्पण करना यह गुरुभक्तियोग का सर्वोच्च सोपान है ।

६. गुरुभक्तियोग में गुरुसेवा सर्वस्व है ।

७. गुरुकृपा गुरुभक्तियोग का आखिरी ध्येय है ।

८. मोटी बुद्धि का शिष्य गुरुभक्तियोग के अभ्यास में कोई निश्चित प्रगति नहीं कर सकता ।

९. जो शिष्य गुरुभक्तियोग का अभ्यास करना चाहता है उसके लिए कुसंग शत्रु के समान है ।

१०. अगर आपको गुरुभक्तियोग का अभ्यास करना हो तो विषयी जीवन का त्याग करो ।

११. जो व्यक्ति दुःख को पार करके जीवन में सुख एवं आनन्द प्राप्त करना चाहता है उसे अन्तःकरणपूर्वक गुरुभक्तियोग का अभ्यास करना जरूरी है ।

१२. सच्चा एवं शाश्वत सुख तो गुरुसेवायोग का आश्रय लेने से ही मिल सकता है, नाशवान बाह्य पदार्थों से नहीं ।

१३. गुरुभक्तियोग उसके अभ्यासु को चिरायु एवं शाश्वत सुख प्रदान करता है । *(क्रमशः)*

मनुष्य जन्म का लक्ष्य

आहार, निद्रा, भय और भोग... क्या यही मनुष्य जीवन है ? यदि हाँ, तो फिर मनुष्य और पशु में अन्तर ही क्या है ? एक मात्र बुद्धिगत ज्ञान ही तो मानवजीवन का वह सर्वोत्तम रत्न है, जिसके बल पर मनुष्य बड़े से बड़े बलशाली पशुओं को अपने अधीन कर लेता है । तो क्यों नहीं हम उस ज्ञान का सदुपयोग करके उस परम दिव्य पथ आत्मसाक्षात्कार की ओर निकल पड़ें जो कि मानव जीवन का परम उद्देश्य है ?

जीवन बहुत ही कम बचा है और वह भी नाना प्रकार की विघ्न-बाधाओं से युक्त है। चारों ओर से दुःखों-कष्टों की मानो बाढ़-सी आ रही है। ऐसे आपद्-विपद् से पूर्ण क्षुद्र जीवन में जो मनुष्य जितनी शीघ्रता से अपने लक्ष्य की ओर ध्यान देकर सावधानी के साथ चलकर उसे प्राप्त कर लेता है, वह उतना ही बुद्धिमान है, उसीका जन्म सार्थक है, सफल है ।

> आज का इन्सान कभी न पूर्ण होनेवाली इच्छाओं तथा सुख-संसाधनों के पीछे इतनी द्रुतगति से भागे जा रहा है कि उसे गिर पड़ने की कोई चिन्ता ही नहीं ।

याद रखिये कि यह मनुष्य जीवन कहीं व्यर्थ की ही बातों में न बीत जाए अन्यथा पछताने के सिवाय कुछ भी बाकी नहीं रहेगा । अतैव प्रत्येक साधक को अपनी स्थिति का विचार करके इस ओर लग जाना चाहिये ।

जो लगे हुए हैं वे आगे बढ़ें और जिन्होंने अभी तक इस पथ पर चलना शुरू नहीं किया, वे आवें और जल्दी चलें । पता नहीं मौत कब आकर प्राण हर ले । कह रहे हैं कि आनेवाले कुछ ही वर्षों में दुनिया की दो-तिहाई आबादी नष्ट हो जाएगी । यदि यह सच है तो इसमें हम भी होंगे । इसलिये क्यों न आज से ही उस ओर चल पड़ें जो मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है ?

सुबह उठे... नहाये... खाया... पिया... पेट भरने के लिये कहीं मजदूरी की... शाम को थककर लौटे... खाया-पिया... बीबी-बच्चों की खुशी की खातिर न चाहते हुए भी घूम-फिर आये...भोग...निद्रा... और फिर वही सुबह... इसके अलावा मानव जीवन की और क्या कहानी है ? क्या यही है हमारा जीवन...?

सुबह का बचपन हँसते देखा
दोपहर की मस्त जवानी ।
शाम का बुढ़ापा ढलते देखा
रात को खत्म कहानी ॥

आज का इन्सान कभी न पूर्ण होनेवाली इच्छाओं तथा सुख-संसाधनों के पीछे इतनी द्रुतगति से भागे जा रहा है कि उसे गिर पड़ने की कोई चिन्ता नहीं, थकान का कोई भय नहीं और परिणाम सामने दिख रहा है कि प्राप्त कुछ होगा नहीं । जो होगा वह भाएगा नहीं तथा जो भाएगा वह शाश्वत रहेगा नहीं, स्थिर रहेगा नहीं, एक दिन नष्ट होकर ही रहेगा । फिर भी मनुष्य उस अप्राप्त नश्वर की तरफ भागना नहीं छोड़ता है क्योंकि विषय-विकारों ने उसकी आँख पर आसक्ति रूपी एक ऐसा पर्दा चढ़ा दिया है, जो उसे कुछ देखने ही नहीं देता है ।

जो नष्ट होनेवाला है, वह संसार है लेकिन जो

कभी नष्ट नहीं हो सकता, कल भी था, आज भी है और सदियों तक रहेगा, तुम्हारी देह के मरने के बाद भी जो तुम्हारा साथ नहीं छोड़ता, वह एक अखंड परमात्मा तुम्हारा आत्मा है और वही तुम खुद हो। बस, उसे एक बार जान लो फिर तुम्हें न कुछ जानना शेष लगेगा तथा न ही कुछ प्राप्त करना।

वह अनोखा है, अद्भुत है, अलख है, सर्वत्र है और सबके अंदर समाया हुआ है। उसमें अदम्य उत्साह और वेग है, पर राग और अशांति के चिह्न नहीं। वह जाज्वल्यमान है, परन्तु जलकण की भाँति शीतल और निर्मल है। वह अनन्त है, पर विचार और भाव के समन्वय से युक्त है।

जो व्यक्ति प्रभुभक्ति के गीत गाता है, उसके गुणों का श्रवण करता है तथा ईश्वर के लिये मन में प्रेम रखता है उसके दुःखों का अन्त हो जाता है।

इस परम तत्त्व के साक्षात्कार अर्थात् भगवत्प्राप्ति के मार्गनिर्देशक होते हैं सद्गुरु, और सद्गुरु वे ही हैं जिन्होंने स्वयं ईश्वर की अनुभूति की है। वे हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं। किसी मस्त संत ने कहा भी है कि जिन्दगी तो कोई दीवाना ही काटता है, बाकी तो सबको जिन्दगी काटती है।

जो व्यक्ति प्रभुभक्ति के गीत गाता है, उसके गुणों का श्रवण करता है तथा ईश्वर के लिये मन में प्रेम रखता है उसके दुःखों का अन्त हो जाता है एवं वह अपने हृदय में उस सुख-स्वरूप ईश्वर को प्राप्त कर लेता है। जिस प्रकार धन के गीत गानेवाले का लोभ बढ़ता है उसी प्रकार ईश्वर अथवा ईश्वरत्व को प्राप्त महापुरुषों के प्रति प्रीति रखने से ईश्वरीय सुख की वृद्धि होती है।

सद्गुरु के श्वासोच्छ्वास के साथ-साथ पवित्रता आती है तथा हवा में मिलकर वह जितनी दूर बहती है, अपने सम्पर्क में आनेवाले वृक्ष, पर्वत, चट्टानों तक को पावन करती है।

रानी चुड़ाला अपने पति राजा शिखरध्वज से कहती है :

"राजन्! आप भोग भोगना चाहें तो अभी इस शरीर का कुछ नहीं बिगड़ा है, यह शरीर पड़ा है आपके सामने लेकिन मुझे तो सद्गुरु ने समझा दिया है कि यह शरीर मलमूत्र का थैला है और एक दिन जला देने योग्य है। आनन्द इसमें नहीं है। आनन्दस्वरूप आपकी आत्मा है।"

रानी ने अपने पति को ज्ञान प्रदान कर दिया।

सद्गुरु के पावन सान्निध्य में रहने से साधक का जीवन निर्मल होने लगता है तथा अज्ञान का पर्दा हटकर ज्ञान का प्रकाश मिलता है। सद्गुरु के सान्निध्य से प्रतिक्षण उनकी अनुभूत तथा प्रायोगिक शिक्षा मिलती है। उनके श्वासोच्छ्वास के साथ-साथ पवित्रता आती है तथा हवा में मिलकर वह जितनी दूर बहती है, अपने सम्पर्क में आनेवाले वृक्ष, पर्वत, चट्टानों तक को पावन करती है।

माता-पिता तो शरीर देते हैं... जन्म देते हैं लेकिन यह तो सद्गुरु ही सिखाते हैं कि इस मिट्टी के शरीर को सोना कैसे बनाया जाय। देह एक घड़ा है और जो इस घड़े में गिर गया है उसे गुरु के बिना समझ नहीं आ सकती। माता-पिता तो हर जन्म में मिलते आये हैं लेकिन सद्गुरु की प्राप्ति तो मनुष्य जीवन में ही सुलभ है।

भौतिक शास्त्र का गुरु मिट्टी से माणिक बना देगा लेकिन सद्गुरु जीवन की मिट्टी के माणिक-मोती बनाते हैं। वे पशु से मनुष्य बनाते हैं, वैचारिक शक्ति प्रदान करते हैं, सत्य दृष्टि देते हैं। ऐसे सद्गुरु से हम किस प्रकार उऋण हो सकेंगे? जिसने बन्दर से मनुष्य बनाये, पशु से पशुपति बनने का जादू सिखाया, उन सद्गुरु का ऋण किस प्रकार चुकाएँ? किन शब्दों से उनका स्तवन करें? उनका

कितना वर्णन करें ? उनका वर्णन करने में वाणी असमर्थ रहती है। गुरु अर्थात् भगवान्... महा भगवान् । गुरु अर्थात् सब कुछ ।

वे लोग बड़े धनभागी हैं जिन्हें ऐसे महान् सद्गुरु की प्राप्ति हुई है और जो दृढ़तापूर्वक इनके उपदेशों का श्रद्धासहित अनुकरण करते हुए सद्गुरोपदिष्ट मार्ग पर चल पड़े हैं । वे निश्चित ही एक दिन लक्ष्यप्राप्ति में सफल होकर भगवत्साक्षात्कार कर ही लेंगे ।

यह कलियुग का ही प्रभाव तो है कि लोग विषय-विकारों और कामनाओं की पूर्ति से ऊपर उठ ही नहीं पा रहे हैं ।

आज कलियुग के मोहान्धकार में पड़कर अधिकतर लोग पथभ्रष्ट हो रहे हैं । भौतिक सुख के अतिरिक्त और भी कुछ है, यह उन बेचारों को पता ही नहीं है । सत्संग रूपी अनुकूल आधार का त्याग करने के कारण अशांति रूपी अग्नि की ज्वाला उनके चारों ओर धधक रही है । देश में पाश्चात्य वानरीकृत संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है और मानवता, धर्म, सदाचार तथा संत-महापुरुषों की उपेक्षा हो रही है ।

यह कलियुग का ही प्रभाव तो है कि लोग विषय-विकारों और कामनाओं की पूर्ति से ऊपर उठ ही नहीं पा रहे हैं । लेकिन मानव यदि चलना चाहे तो कलियुग में हजारों दोषों के बाद भी एक महान् गुण है कि इसमें अन्य युगों की अपेक्षा साधना तीव्र गति से सफल होती है । विष्णुपुराण में लिखा है :

ध्यायन् कृते यजन् यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्चयन् ।
यदाप्नोति यदाप्नोति कलौ संकीर्त्य केशवम् ॥

सतयुग में भगवान विष्णु का ध्यान करने से, त्रेतायुग में यज्ञों द्वारा यजन करने से तथा द्वापर युग में परिचर्या करने से मनुष्य को जिस फल की प्राप्ति होती है, वही फल कलियुग में भगवन्नाम-संकीर्तन से प्राप्त होता है ।

(विष्णुपुराण : ६-२-९६)

कलियुग की इस महिमा को हमारे अनेक धर्मशास्त्रों ने गाया है । अतः हम सबका कर्त्तव्य है कि मानव जीवन के परम उद्देश्य 'आत्म-साक्षात्कार' की प्राप्ति के लिये हम इस युग में प्राप्त छूट का लाभ उठा लें । पता नहीं जिन्दगी की गाड़ी कब किस मोड़ पर रुक जाए । मनुष्य देह मिल पाना बहुत दुर्लभ है और मृत्यु शाश्वत सत्य है । अतः जन्म-मरण के चक्करों से मुक्त होने के लिये हमें अपने पिछले हजारों जन्मों की वासनाओं को मिटाकर किसी सद्गुरु के हाथों अपने जीवन की डोर सौंप देना चाहिये, तब ही मानव जीवन के परम उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार तक पहुँचा जा सकता है ।

त्यज दुर्जनसंसर्गम्
भज साधुसमागमम् ।
कुरु पुण्यमहोरात्रं
स्मर नित्यमनित्यतः ॥

आत्मकल्याण के इच्छुक व्यक्ति को दुर्जन की संगति छोड़ देनी चाहिये और साधु पुरुषों का संग करना चाहिये । उसे इस असार संसार में प्रतिदिन कोई न कोई पुण्य कार्य करते रहना चाहिये । वस्तुतः उसे अनित्य संसार में वासना का परित्याग करके नित्य शुद्ध ब्रह्म, परब्रह्म परमेश्वर का स्मरण करना चाहिये । इसीमें मनुष्य का सच्चा सुख और कल्याण निहित है ।

आप स्वप्नदृष्टा हैं और यह जगत आपका ही स्वप्न है । बस, जिस क्षण यह ज्ञान हो जायगा उसी क्षण आप मुक्त हो जायेंगे ।

श्रीराम-वशिष्ठ संवाद

दीर्घकालीन अभ्यास की आवश्यकता

श्री वशिष्ठजी कहते हैं : "हे राम ! जब तक मन विलीन नहीं होता, तब तक वासना का सर्वथा विनाश नहीं होता और जब तक वासना विनष्ट नहीं होती, तब तब चित्त शान्त नहीं होता । जब तक परमात्मा के तत्त्व का यथार्थ ज्ञान नहीं होता, तब तक चित्त को शान्ति कहाँ और जब तक चित्त की शान्ति नहीं होती, तब तक परमात्मा के तत्त्व का यथार्थ ज्ञान कहाँ ? जब तक वासना का सर्वथा नाश नहीं होगा, तब तक तत्त्वज्ञान कहाँ से होगा और जब तक तत्त्वज्ञान नहीं होगा, तब तक वासना का सर्वथा विनाश नहीं होगा । इस प्रकार (१) परमात्मा का यथार्थ ज्ञान (२) मनोनाश और (३) वासना क्षय - ये तीनों ही एक-दूसरे के कारण हैं । ये दुःसाध्य हैं किन्तु असाध्य नहीं । विशेष प्रयत्न करने से ये तीनों कार्य सिद्ध हो सकते हैं । हे राम ! विवेक से युक्त पौरुष-प्रयत्न से भोगेच्छा का दूर से ही परित्याग करके इन तीनों का अवलम्बन करना चाहिए ।

यदि उपर्युक्त तीनों उपायों का एक साथ प्रयत्नपूर्वक भली प्रकार अभ्यास न किया जाये तो सैकड़ों वर्ष तक भी परमपद की प्राप्ति संभव नहीं है । यह संसार की स्थिति सैकड़ों जन्म-जन्मांतरों से मनुष्यों के द्वारा अभ्यस्त है, अतः चिरकाल तक योगाभ्यास किये बिना वह किसी तरह नष्ट नहीं हो सकती । इसीलिए चलते-फिरते, श्रवण करते, सोचते, खड़े रहते, सोते-जागते... सभी अवस्थाओं में परम कल्याण के लिए इन तीनों के अभ्यास में लग जाना चाहिए । तत्त्वज्ञानियों का मत है कि वासनाओं के परित्याग के समान ही प्राणायाम भी एक उपाय है । इसलिए वासना-परित्याग के साथ-साथ प्राण-निरोध का भी अभ्यास करना आवश्यक है । चिरकाल तक प्राणायाम के अभ्यास से, योगाभ्यास में कुशल गुरु द्वारा बतायी हुई युक्ति से, स्वस्तिक आदि आसनों की सिद्धि से और उचित भोजन से प्राणस्पन्दन का निरोध हो जाता है । जिस प्रकार मदमत्त हाथी अंकुश के बिना दूसरे उपाय से वश में नहीं होता, इसी प्रकार पवित्र युक्ति के बिना मन वश में नहीं होता । अध्यात्मविद्या की प्राप्ति, साधु-संगति, वासना का सर्वथा परित्याग और प्राण-स्पन्दन का निरोध - ये ही युक्तियाँ चित पर विजय पाने के लिए निश्चित रूप से दृढ़ उपाय हैं । इनसे तत्काल ही चित्त पर विजय प्राप्त हो जाती है और साधक को परम तत्त्व का साक्षात्कार हो जाता है ।"

श्री योगवाशिष्ठ महारामायण

> सत्संग, सत्कर्म, आत्मविचार किया हो, आत्मज्ञान की बातें सुनी हो तो वे व्यर्थ नहीं जाती । उनके संस्कार कभी न कभी जाग्रत हो जाते हैं और मनुष्य को भगवत्प्राप्ति की ओर ले जाते हैं ।

*

होगा और जब
र्था विनाश नहीं
२) मनोनाश और
हैं । ये दुःसाध्य
तीनों कार्य सिद्ध
यत्न से भोगेच्छा
अवलम्बन करना

पूर्वक भली प्रकार
की प्राप्ति संभव
ांतरों से मनुष्यों
किये बिना वह
रते, श्रवण करते,
में परम कल्याण
ए । तत्त्वज्ञानियों
ाणायाम भी एक
प्राण-निरोध का
याम के अभ्यास
त्त से, स्वस्तिक
प्राणस्पन्दन का
ा के बिना दूसरे
ी प्रकार पवित्र
। अध्यात्मविद्या
सर्वथा परित्याग
दन का निरोध -
चित पर विजय
निश्चित रूप से
। इनसे तत्काल
विजय प्राप्त हो
साधक को परम
ात्कार हो जाता

श्री योगवाशिष्ठ महारामायण

आत्म प्रसाद

'जिस पर राम प्रेम करे...'

हनुमानजी सीता माता की खोज में अनेक तरह की कठिनाइयों का सामना करते हुए लंका पहुँचे । अशोकवाटिका में माता सीता के दर्शन कर उन्हें भगवान का संदेश दिया । माता सीता हनुमानजी पर बहुत प्रसन्न हुई । लंका में अपनी पूँछ का चमत्कार दिखाकर प्रभु के पास लौटने से पहले हनुमानजी पुनः अशोकवाटिका में माता से आज्ञा माँगने पहुँचे तो माता ने उन्हें भगवान श्रीराम के लिये संदेश भेजा तथा हनुमानजी को आशीर्वाद दिये ।

कितनी ही कसौटियों से गुजरने के बाद माता का आशीर्वाद प्राप्त होता है !

सीताजी ने हनुमानजी को आशीर्वाद दिया कि 'अजर बनो ।' लेकिन अजर होने का आशीर्वाद सुनकर हनुमानजी खामोश ही खड़े रहे, तनिक भी नहीं हिले-डुले ।

सीताजी को लगा कि शायद अजर होने का वरदान इसे कम पड़ता है इसलिये उन्होंने दूसरा वरदान दिया कि 'तुम अमर बनोगे ।' लेकिन हनुमानजी इससे भी प्रभावित नहीं हुए । जब माता को लगा कि इसे अजर-अमर होने में रस नहीं है तब उन्होंने तीसरा आशीर्वाद दिया कि : 'गुणनिधि सुत होहू... तुम गुणों की निधि होगे ।'

हनुमानजी को इससे भी आनंद न मिला तब माताजी समझ गयीं कि इसको किस बात की भूख है । उन्होंने कहा :

"अजर, अमर और गुणनिधि तो ठीक, लेकिन जाओ, मेरा आशीर्वाद है कि श्रीराम तुमसे बहुत प्रेम करेंगे ।"

'करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ।'

'प्रेम करेंगे ।' इतना सुनते ही हनुमानजी को मानो समाधि लग गई । वे बोले : "बस माँ ! मुझे यही चाहिये । मुझे अजर- अमरवाला वरदान नहीं, मुझे तो मेरे भगवान मुझसे प्रेम करें, यही चाहिये ।"

कितने ही आशीर्वाद हनुमानजी को मिले :

अष्टसिद्धि नवनिधि के दाता ।
अस वर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हारे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावे ।
जन्म-जन्म के दुःख बिसरावे ।।
अंतकाल रघुपति पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धराई ।
हनुमंत सेई सर्व सुख कराई ।।
संकट हरे मिटे सब पीरा ।
जो सुमरे हनुमंत बलवीरा ।।

लेकिन 'राम तुम्हें प्रेम करेंगे' यह सुनते ही हनुमानजी को मानो समाधि लग गई !

सीता माता ने पूछा : "हनुमंत ! इतने सारे आशीर्वाद मिले फिर भी तुम खुश न हुए लेकिन 'राम तुम्हें प्रेम करेंगे' यह सुनकर तुम शरीर की भी सुध-बुध खो बैठे इसका क्या कारण है ?"

हनुमानजी ने वंदन कर कहा : "माता ! आप तो सर्वज्ञ हैं, सब जानते हैं । श्रीराम जिससे प्रेम करें, उसके लिये

> "माता ! आप तो सर्वज्ञ हैं, सब जानते हैं फिर भी श्रीराम जिसे प्रेम करें, उसके लिये तो क्या कहना ! उसके वर्णन के लिये तो मेरे पास शब्द ही नहीं हैं ।"

तो क्या कहना ! उसके वर्णन के लिये तो मेरे पास शब्द ही नहीं हैं ।"

हनुमानजी की सच्ची निष्ठा से माता बहुत प्रसन्न हुई । उन्होंने आशीर्वाद देकर हनुमानजी को जाने की आज्ञा प्रदान की । हनुमानजी की इष्टभक्ति में अनन्य निष्ठा का ही तो यह फल है कि जहाँ भी 'राम-लक्ष्मण-जानकी' को याद किया जाता है, वहाँ हनुमानजी की जयघोष अवश्य होती है ।

राम लक्ष्मण जानकी ।
जय बोलो हनुमान की ॥

❀

साधन पर सन्देह नहीं

समुद्र के तट पर एक व्यक्ति चिन्तातुर बैठा था, इतने में उधर से विभीषण निकले । उन्होंने उस चिन्तातुर व्यक्ति से पूछा : "क्यों भाई ! किस बात की चिन्ता में पड़े हो ?"

"मुझे समुद्र के उस पार जाना है लेकिन कोई साधन नहीं है । अब क्या करूँ ? इस बात की चिन्ता है ।"

"अरे... इसमें इतने अधिक उदास क्यों होते हो ?" ऐसा कहकर विभीषण ने एक पत्ते पर एक नाम लिखा तथा उसकी धोती के पल्लू से बाँधते हुए कहा : "इसमें तारक मंत्र बाँधा है । तू अपनी श्रद्धा रखकर तनिक भी घबराये बिना पानी के ऊपर चलते जाना । अवश्य पार लग जाएगा ।"

विभीषण के वचनों में विश्वास रखकर वह भाई समुद्र की ओर आगे बढ़ा तथा सागर की छाती पर नाचता-नाचता पानी पर चलने लगा । जब बीच समुद्र में आया तब उसके मन में संदेह हुआ कि विभीषण ने ऐसा कौन-सा तारक मंत्र लिखकर मेरे पल्लू से बांधा है कि मैं समुद्र के ऊपर चल सकता हूँ ! जरा देखना चाहिये ।

श्रद्धा और विश्वास के मार्ग में संदेह ऐसी विकट परिस्थितियाँ निर्मित कर देता है कि काफी ऊँचाई तक पहुँचा हुआ साधक भी विवेक के अभाव में संदेह रूपी षड्‌यंत्र का शिकार होकर अपना पतन कर बैठता है तो फिर साधारण इन्सान के लिये तो संदेह की आँच ही गिराने के लिये पर्याप्त है ।

हजारों-हजारों जन्मों की साधना अपने सद्‌गुरु पर संदेह करने मात्र से खतरे में पड़ जाती है । अतः साधक को सद्‌गुरु के दिये हुए अनमोल रत्न समान बोध पर कभी संदेह नहीं करना चाहिये ।

उस व्यक्ति ने अपने पल्लू में बँधा हुआ पन्ना खोला और पढ़ा तो उसमें दो अक्षर का 'राम' नाम लिखा हुआ था । उसकी श्रद्धा तुरन्त ही अश्रद्धा में बदल गई कि : "अरे ! यह तारक मंत्र है ! यह तो सबसे सीधा सादा राम नाम है !" मन में इस प्रकार की अश्रद्धा उपजते ही वह डूब मरा ।

श्रद्धा और विश्वास के मार्ग में संदेह ऐसी विकट परिस्थितियाँ निर्मित कर देता है कि काफी ऊँचाई तक पहुँचा हुआ साधक भी विवेक के अभाव में संदेह रूपी षड्‌यंत्र का शिकार होकर अपना पतन कर बैठता है ।

हृदय में भरपूर श्रद्धा हो तो मानव में से महेश्वर बन सकता है । अतः अपने हृदय को अश्रद्धा से बचाना चाहिये । इस प्रकार के संग, मित्र एवं परिस्थितियों से सदैव बचना चाहिये जो ईश्वर तथा संतों के प्रति बनी हमारी आस्था, श्रद्धा व भक्ति को डगमगाते हों ।

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेद् ।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेद् ॥

कुल के हित के लिये एक व्यक्ति को त्याग दो । गाँव के हित के लिये एक कुल को त्याग दो । देश के हित के लिये एक गाँव का परित्याग कर दो और आत्मा के कल्याण के लिये सारे भूमंडल को त्याग दो ।

❀

स्वाश्रयी
परिस्थिति
सबसे बड़ी दु
किसी साधन अ
हम सोचते
धन-दौलत हो
बंगला हो, इत
व सहयोगी हों,
प्राप्त करेंगे
विचारधारा ग
केवल उन्हीं क
से उद्योग क
दूसरों के
सबसे बड़ा म
अपने हृदय मे
है । हम तो प
नहीं थकता अ
में चेतना, स्फू
लेकिन हम हैं
होकर कार्य व
की चिंताओं म
संसार में
तो वे जो कदम
आराम, व्यवस्थ
लिये दूसरों प
हैं और जिन प
कभी अन्यत्र च
नवीन परिस्थि
वातावरण में
आ पड़े तो उन
समय उपस्थित
प्रकार की मा
काल्पनिक क

स्वाश्रयी बनो और चलते रहो...

परिस्थितियों से घबरा जाना मानव जीवन की सबसे बड़ी दुर्बलता है । हमारे पूर्वजों ने तो बिना किसी साधन और सहायक के उन्नति की थी लेकिन हम सोचते हैं कि इतनी धन-दौलत हो, गाड़ी-मकान-बंगला हो, इतने नौकर-चाकर व सहयोगी हों, तब हम सफलता प्राप्त करेंगे लेकिन यह विचारधारा गलत है । ईश्वर केवल उन्हीं की सहायता करता है जो स्वयं पुरुषार्थ से उद्योग करते हैं ।

> वे ही लोग अपने जीवन में सफल हो पाये हैं जिन्होंने दृढ़ता व साहस से परिस्थितियों का सामना किया है ।

दूसरों के सहारे भी कोई जीवन चलता है ? सबसे बड़ा मददगार तो परमात्मा है, ईश्वर है और अपने हृदय में बैठकर वह निरन्तर प्रेरणा भी देता है । हम तो परिश्रम करके थक जाते हैं लेकिन वह नहीं थकता और दिन-रात हमारे शरीर के अवयवों में चेतना, स्फूर्ति और वृद्धि का संचार करता है । लेकिन हम हैं कि प्रमाद, निद्रा और आलस्य से ग्रस्त होकर कार्य करने में रस ही नहीं लेते और व्यर्थ की चिंताओं में उलझते जाते हैं ।

संसार में दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं : एक तो वे जो कदम-कदम पर अपने आराम, व्यवस्था तथा जीवन के लिये दूसरों पर ही निर्भर रहते हैं और जिन पर वे निर्भर हैं वे कभी अन्यत्र चले जायें या उन्हें नवीन परिस्थितियों अथवा नये वातावरण में रहने का अवसर आ पड़े तो उनके लिये कष्ट का समय उपस्थित हो जाता है । वे मन ही मन विभिन्न प्रकार की मानसिक चिंताओं, गुप्त वेदनाओं तथा काल्पनिक कष्टों का झंझावात खड़ा कर लेते हैं ।

> मानव तन के जर्रे-जर्रे में पुरुषार्थ भरा हुआ है लेकिन दूसरों का सहारा लेने के संस्कार ऐसे पड़ गये हैं कि चाहकर भी अपनी हस्ती को नहीं पहचान रहा है ।

दूसरे वे लोग होते हैं, जो स्वयं स्वाश्रयी रहकर अपने समस्त व्यक्तिगत कार्यों का संपादन करते हैं तथा प्रत्येक परिस्थिति में स्वस्थ, प्रसन्न व सम रहकर दूसरों को भी यथाशक्ति प्रेरणा व सहायता प्रदान करते हैं । व्यर्थ की कल्पित चिंताएँ तथा वेदनाएँ कभी उन तक पहुँच ही नहीं पाती हैं तथा यदि कभी कोई प्रतिकूल परिस्थिति आ भी जाय तो उनकी स्वस्थ मानसिकता पर उसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता । मनुष्य की ऐसी ही मानसिकता होनी चाहिये ।

कई लोग प्रतिकूल अथवा नवीन परिस्थितियों का सामना करने का साहस नहीं जुटा पाते हैं । वे छोटी-छोटी बातों में व्यग्र होकर काल्पनिक चिंताओं के महल बनाया करते हैं जो भीतर ही भीतर उनकी शक्ति और सामर्थ्य को दीमक की भाँति चाट जाती है और कई बार तो चिंता-चिंता में घुलकर वे मर जाते हैं बेचारे ।

चिंता ऐसी डाकिनी,
काट कलेजा खाय ।
वैद्य बेचारा क्या करे,
कहाँ तक दवा लगाय ॥

वे ही लोग अपने जीवन में सफल हो पाये हैं जिन्होंने दृढ़ता व साहस से परिस्थितियों का सामना किया है । वे लोग अक्सर बाजी हार जाते हैं जिनके पास प्रतिकूलताओं का सामना करने की हिम्मत नहीं होती है ।

कुआँ या बावली की दीवार पर उगे हुए पीपल या वट के पौधे को देखो । किसी पहाड़ की चट्टान पर खड़े वृक्ष को देखो । न तो उनके पास पर्याप्त

मिट्टी होती है, न ही जड़ फैलाने के लिये पर्याप्त स्थान। फिर भी उनकी जड़ें टेढ़ी-मेढ़ी होकर प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने लिये मिट्टी, जल, प्रकाश, वायु आदि का प्रबंध कर विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेती है।

मानव तन के जर्रे-जर्रे में पुरुषार्थ भरा हुआ है लेकिन दूसरों का सहारा लेने के संस्कार ऐसे पड़ गये हैं कि चाहकर भी वह अपनी हस्ती को नहीं पहचान रहा है। मनुष्य में इतना सामर्थ्य छुपा है कि वह जो चाहे सो कर सकता है लेकिन आलस्य ने उसके मन, बुद्धि और शरीर तीनों ही को इतना दुर्बल बना दिया है कि उसकी सारी शक्तियाँ पंगु हो गई हैं।

> ईश्वर सदैव तुम्हारी सहायता करने के लिये तैयार है लेकिन तुम उठकर दो कदम चलो तो सही! फिर भले ही पथ साधना का हो या समर-संग्राम का।

आलस्य अथवा परावलंबी होना एक प्रकार का अंधकार है जो आत्मा पर, शक्तियों पर तथा मनुष्य की भावी उन्नति एवं प्रगति पर तुषारापात कर देता है। फिर उस मनुष्य के लिये किसी भी प्रकार की उत्कृष्टता प्राप्त करना कठिन है।

याद रखो : कीर्ति और लक्ष्मी-स्वाश्रयी के आधीन है। जो अपना काम स्वयं करता है, सजगता से श्रम व उद्योग के साथ करता है वही यश, प्रतिष्ठा व कीर्ति प्राप्त करेगा।

अधिक दूर नहीं, हमारे ही देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों का आरम्भिक इतिहास पढ़ो तो ज्ञात होगा कि कितनी ही कठिनाइयों से उन्होंने अपना बचपन गुजारा है लेकिन जब पुरुषार्थ का सहारा लेकर वे स्वाश्रयी हुए तो आज हजारों लोगों को उनसे रोजगार मिल रहा है। कहा भी गया है कि 'स्वावलंबन की एक झलक पर, न्योछावर कुबेर का कोष।'

ईश्वर सदैव तुम्हारी सहायता करने के लिये तैयार है लेकिन तुम उठकर दो कदम चलो तो सही! फिर पथ भले ही साधना का हो या समर-संग्राम का या अन्य कोई भी...। इरादा दृढ़ है तो मंजिल मिलकर ही रहेगी। हजार-हजार बार असफल होने पर भी एक कदम और उस राह में उठाओ... यह मेरा दावा है कि विजयश्री तुम्हारे कदमों को चूम कर ही रहेगी।

उठो... वीर! उठो... शाबाश... कमर कसकर चल पड़ो। आरंभ में पंथ पथरीला है और तुम्हें खुले पैर पैदल ही जाना होगा लेकिन आगे सफलता रूपी देवी तुम्हारे मार्ग को फूलों से सजाने खड़ी है। जो तुम्हें मंजिल तक पहुँचाकर ही रहेगी।

चरैवेति... चरैवेति... प्रचलाम् निरंतरम्।

तूफान और आँधी, हमको न रोक पाये।
वे और थे मुसाफिर जो पथ से लौट आये॥

विद्या-कंठ, पैसा-गंठ ही काम देता है। चरित्रवान नारी से घर शोभता है। सदाचारियों के संग, सत्संग से जीवन शोभा देता है। 'परस्पर देवो भव' की भारतीय संस्कृति की भावना, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सिद्धान्त ही मानवमात्र को सुख-शांति दे सकता है।

सम्पत्ति गई तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ-कुछ गया और चरित्र गया तो सब कुछ सर्वनाश हो गया। अतः चरित्रवान बनो। सदाचारी और स्नेही व्यक्ति हर क्षेत्र में सफल होता है।

❀

जिस किसी भी स्थान में परमात्मा का श्रवण, कीर्तन, गुणानुवाद होता है वह स्थान पवित्र है। उस स्थान को तीर्थत्व प्राप्त होता है।

र असफल होने
वं उठाओ... यह
कदमों को चूम
।
वीर ! उठो...
र कसकर चल
में पंथ पथरीला
ले पैर पैदल ही
लेकिन आगे
देवी तुम्हारे मार्ग
तुम्हें मंजिल तक

निरंतरम् ।
रोक पाये ।
लौट आये ॥

म देता है ।
सदाचारियों
ा है। 'परस्पर
की भावना,
ही मानवमात्र

ाया, स्वास्थ्य
रित्र गया तो
तः चरित्रवान
त हर क्षेत्र में

परमात्मा का
है वह स्थान
व प्राप्त होता

दधीचि ऋषि

(गतांक का शेष...)

ऋषि को विचार आया कि यह चिन्ता असत् वस्तु को सत् मानने से ही हो रही है, असत्, जड़, दुःखरूप संसार को सत् मानने से ही चिन्ता लग रही है । यह ज्ञान प्रगट होते ही ऋषि थोड़े शान्त हो गये ।

ज्ञान बड़ी रक्षा करता है, सहायता करता है । जहाँ अस्त्र-शस्त्र भी काम नहीं देते, संगी-साथी भी काम नहीं आते वहाँ भी ज्ञान आपकी रक्षा करता है । मृत्यु के समय कोई रक्षा नहीं करेगा किन्तु तब भी आपका सुना हुआ सत्संग आपकी रक्षा करेगा । आपमें पड़े हुए सत्संग के संस्कार आपकी अवश्य रक्षा करेंगे ।

दधीचि ऋषि सत्संग के विचार में खो गये :

'असत् को सत् मानने से जो चिन्ता उत्पन्न हुई है, उसको दूर कैसे किया जाये ?' ऐसा सोचकर उन्होंने अपनी ज्ञानशक्ति का उपयोग किया । ज्ञानशक्ति के द्वारा जगत् के मिथ्यात्व को याद करते हुए, अपनी आत्मा को सत्य-भाव से स्वीकार करते-करते चित्त की वृत्तियों को अपने-आपमें प्रतिष्ठित कर दिया और प्रश्न लेकर गहरे में चले गये कि अब क्या करना चाहिए ? प्रश्न और उसके उपाय को जानने के लिए, उसका रास्ता निकालने के लिए दधीचि ऋषि अन्तर्मुख हो गये ।

आज दधीचि ऋषि की तरह व्यवहार में आपको भी छोटे-मोटे अस्त्र-शस्त्र कोई देता होगा । पचास-सौ रूपये आपके लिए अस्त्र-शस्त्र ही तो हैं । किसीने जमानत पर हस्ताक्षर करवा लिये, किसीने कुछ कर दिया । कुछ-न-कुछ तो होता ही है । धोखा-धड़ी तो दुनिया में चलती ही है । इस कलियुग में तो धोखे के सिवा और रहता भी क्या है ?

आपके जीवन में भी यदि दधीचि ऋषि जैसा प्रसंग आये तो आप विह्वल मत होना, चिन्तित मत होना, दूसरे की फरियाद का आरोप मत करना, दूसरे का आरोप अपने सिर पर सच्चा मत मानना अपितु आप प्रभु की शरण लेकर, ज्ञान की शरण लेकर, दधीचि की तरह अन्तर्मुख हो जाना ।

विश्व का ऐसा कोई दुःख नहीं है जिसका उपाय विश्वेश्वर में विश्रांति करने से न मिले । जब-जब विश्व का कोई दुःख आये, चल वस्तु का कोई दुःख आये, विघ्न आये, तब आप अचल की तरफ चले जाइए । आप घर के किसी एकांत कोने में ही एक ऐसी जगह पसंद कर लीजिए ताकि जब-जब चल वस्तु आपको विचलित कर दे तब-तब आप वहाँ बैठकर अचल में जा सको, परमात्मा के ध्यान में डूब सको ।

दधीचि ऋषि भीतर से दुर्बल न हुए, हताश न हुए, निराश न हुए । कहाँ तो पूरे असुरों का झुण्ड और कहाँ अकेले दधीचि ऋषि ! उन्होंने ध्यान किया, ज्ञान की गहराई में गये और उपाय खोजा । उपाय खोजते-खोजते उन्हें यह पता चला कि - 'ये शस्त्र इतने सफल हुए क्योंकि इनमें मंत्र का प्रभाव है ।' फिर मंत्रों का प्रभाव इनमें कैसे प्रतिष्ठित हुआ और

उन मंत्रों के प्रभाव का उपयोग कैसे किया जाये यह जानने के लिए वे फिर ध्यान की गहराई में, अचल तत्त्व की शरण में चले गये । जहाँसे सारा ज्ञान, सारी विद्याएँ प्रगट होती हैं उसी परमात्मा में गोता लगाकर वे ध्यानस्थ हो गये । तब उन्हें वे मंत्र स्पष्ट रूप से दिखने लगे । जब वे मंत्र साफ-साफ दिखने लगे तो उन्होंने मंत्रों का एवं मन्त्रों के अधिष्ठाता देवों का पूजन किया । जिस व्यक्ति का पूजन किया जाता है वह आपके अनुकूल हो जाता है । जिन मंत्रों का आदर किया जाता है वे मंत्र भी आपके अनुकूल हो जाते हैं । जिन शास्त्रों का आदर किया जाता है वे शास्त्र भी आपके अनुकूल हो जाते हैं ।

कई लोग संतों की वाणी पढ़ते हैं, शास्त्र पढ़ते हैं किन्तु पढ़कर जो छोड़ देते हैं, उन्हें इतना फायदा नहीं होता, जितना उन लोगों को होता है जो शास्त्रों का आदर करते हैं । जैसे - भक्तमाल, रामायण, भागवत, गीता, योगवाशिष्ठ महारामायण आदि पवित्र कल्याणकारक ग्रन्थों का जो आदर करते हैं, संतों की वाणी जिस शास्त्र में है उसका जो आदर करते हैं उनको उनकी वाणी कभी-न-कभी अवश्य काम देगी । किताब पढ़ते-पढ़ते हटा दी, उलटी कर दी, भगवान शंकरजी की श्रीगुरुगीता को उल्टी रखकर छोड़ दी तो फिर क्या गुरुगीता पढ़ी ? शास्त्रों का आदर करना चाहिए ।

दधीचि ऋषि ने मंत्रों का पूजन किया तो मंत्रों का रहस्य उनके समक्ष प्रगट हो गया । उन्होंने उन्हीं मत्रों को दुहराकर मंत्रों के तेज को देखा और उस तेज को शुद्ध जल में प्रतिष्ठित कर दिया । फिर उस मंत्रों के तेज से युक्त जल को स्वयं पी गये और बड़े तेजस्वी हो गये । वह पानी उनके रक्त के साथ मिलकर रक्त हो गया, फिर सात धातुओं के साथ मिलकर उनकी अस्थियों में वह तेज प्रतिष्ठित हो गया ।

ऋषि ने देखा कि अब दैत्य आकर अस्त्र-शस्त्रों को ले भी जायें तो कोई हरकत नहीं, क्योंकि दैत्य तो केवल बुट्ठे अस्त्र-शस्त्र ही ले जा सकेंगे । उनकी तेजस्विता तो मेरे पास आ गयी । ये अस्त्र-शस्त्र तो एक कीड़े को मारने में भी सफल नहीं होंगे । अस्त्र-शस्त्रों का बल तो काम आयेगा नहीं, क्योंकि उनका तेज मैंने पी लिया है ।

ऋषि निश्चिन्त हो गये ।

असुरों के पास जब थोड़ी शक्ति आयी तब उन्होंने वृत्रासुर को प्रगट करके युद्ध आरंभ कर दिया । वृत्रासुर ने जब युद्ध प्रारंभ किया तब इन्द्र ने देखा कि अब उन अस्त्र-शस्त्रों के सिवाय विजय होना कठिन है । अब क्या करें ? चलो, दधीचि ऋषि के पास चलकर अस्त्र-शस्त्र ले आयें । देवता लोग गये दधीचि ऋषि के पास ।

> जीवन में जब कुछ उथल-पुथल मचे तो भले आपकी निर्णय शक्ति कितनी भी बढ़िया हो ? लेकिन आपके कुटुम्ब में, परिवार में सबसे सलाह लो, हितैषियों के विचार भी लो । फिर आखिरी निर्णय भले आप करो । मिलजुलकर काम करने से सफलता मिलती है और विघ्न कम हो जाते हैं ।

दधीचि ऋषि ने कहा : "वे पड़े हैं तुम्हारे अस्त्र-शस्त्र । लेकिन निस्तेज हैं ।"

देवताओं ने देखा कि अस्त्र-शस्त्र तो बिल्कुल निस्तेज हैं । इनसे सफल होने की कोई संभावना नहीं दिखती । जैसे प्राण बिना का शरीर होता है वैसे ही तेज बिना के ये शस्त्र हैं । देवताओं में कुछ योग्यता तो होती ही है परखने की । जैसे - कुछ पटाखे ऊपर से दिखते तो वैसे के वैसे हैं किन्तु उनमें से बारूद निकल जाती है तो फिर वे किसी काम के नहीं होते । ऐसे ही ये अस्त्र-शस्त्र दिख तो रहे

हैं वैसे के वैसे, किन्तु इनका तेज निकल चुका है और वह तेज ऋषि के चेहरे पर चमक रहा है ।

दधीचि ऋषि ने कहा : "देवताओं ! मुझे तुम अमानत देकर गये थे और मैंने विधि से उनका तेज पी लिया है । अब तुम्हें चाहिए तो वह तेज मेरी अस्थियों में है । मुझे मारकर मेरी अस्थियाँ ले जाओ ।"

देवता सोच में पड़ गये : 'ऐसे महान् तेजस्वी, ब्रह्मज्ञानी ऋषि की हत्या करने से, ब्रह्महत्या के पाप से तो इन्द्र का इन्द्रपद नहीं रहेगा, देवों का देवपद नहीं रहेगा और अस्त्र-शस्त्र के बिना पूरी सुरपुरी का नाश हो जायेगा । अब क्या किया जाये ? देवता लोग बड़े चिंतित हो गये और गये ब्रह्माजी के पास ।

ब्रह्माजी ने समाधि लगाकर देखा कि दधीचि ऋषि की अस्थियों में जो शस्त्रों का तेज है उसके सिवाय वृत्रासुर मर ही नहीं सकता और दधीचि ऋषि की हत्या करके या जीते-जी उन्हें मारकर उनकी हड्डियों को ले आना भी संभव नहीं है । यदि वृत्रासुर को नहीं मारा जाता तो पूरा सुरपुर असुरों के हाथ में आ जायेगा ।

ऐसा नहीं कि ब्रह्माजी ने सृष्टि बनाई है तो संकल्प करके छूमंतर कर दें ! नहीं, सृष्टि बनाने के बाद भी सृष्टिकर्त्ता के लिए भी नियम तो होते ही हैं । आपने जो मकान बनवाया उसे मिटाना चाहते हो तो क्या केवल रूपये से मिटा सकते हो ? नहीं, क्योंकि मकान केवल रूपयों से नहीं बनता । उसके लिए वस्तुओं की, कारीगरों की जरूरत पड़ती है । अब आप रूपये फेंकें तो मकान थोड़े ही गिरेगा ? उसके कारीगरों - मजदूरों को बुलवाकर ही मकान तोड़ा जा सकता है । अतः जिस काम को जिस ढंग से किया जाता है उसी ढंग से वह हो सकता है । छूमंतर से सब काम नहीं होते । जैसे - लोहे से ही लोहा कटेगा, सोने से थोड़े ही लोहा कटेगा ?

देवताओं ने ब्रह्माजी के साथ मिलकर विचार-विमर्श किया और पुनः दधीचि ऋषि के पास ही जाने का निर्णय लिया । भगवान श्रीकृष्ण उद्धव, सात्यकि, बलराम आदि के साथ मिलकर, सलाह लेकर निर्णय लेते थे । भगवान राम भी हनुमान, जाम्बवंत आदि सचिवों से मिल-जुलकर, विचार-विमर्श करके कोई निर्णय लेते थे । आपके जीवन में भी जब कुछ उथल-पुथल मचे तो भले आपकी निर्णयशक्ति कितनी भी बढ़िया क्यों न हो, लेकिन आपके कुटुम्ब में, परिवार में सबसे सलाह लो, हितैषियों के विचार भी लो फिर आखिरी निर्णय भले आप करो । मिलजुलकर काम करने से सफलता मिलती है और विघ्न कम हो जाते हैं ।

देवता लोग भी विचार-विमर्श करके अंत में दधीचि ऋषि के पास गये । ऋषिपत्नी ने देखा कि ये देवता लोग पहले भी मेरे पतिदेव को समझा-बुझाकर झगड़े की जड़ छोड़ गये । अब दुबारा आये हैं और सुना है कि वृत्रासुर ने युद्ध आरंभ कर दिया है । ये इसीलिए आये हैं । अब तक तो आते नहीं थे, अब आ रहे हैं बार-बार, तो जरूर दाल में कुछ काला है । अभी मेरे स्वामी को न जाने कैसे फँसायेंगे ? अतः वह वहीं बैठी रही ।

दधीचि ऋषि ने कुशल समाचार पूछा । देवताओं ने कुशलक्षेम की बात कही और फिर जब युद्ध की बात करने जा रहे थे तब बार-बार ऋषिपत्नी की ओर देख रहे थे । उनके समक्ष उनके ही पति की अस्थियों को लेने की बात कैसे कर सकते थे ? वे भाव से भरी हैं, पतिव्रता हैं और पति की हत्या की बात या अस्थियाँ देने की बात तो वे सुन भी नहीं सकती । बार-बार देवताओं द्वारा ऋषिपत्नी के सम्मुख कुछ कहने में संकोच व्यक्त करने के कारण ऋषि समझ गये और उन्होंने धर्मपत्नी को आज्ञा की कि 'तुम भीतर चली जाओ ।' पति की आज्ञा शिरोधार्य करके ऋषिपत्नी भीतर चली गयीं ।

तब देवताओं ने कहा : "हे मुनिश्रेष्ठ ! अब तो हमारे पास कोई उपाय नहीं है...

(क्रमशः)

होली की सावधानियाँ

होली... एक पुनीत पावन पर्व है भारतीय संस्कृति की पहचान का... एक संकेत है वसन्तोत्सव के रूप में ऋतुपरिवर्तन का... एक अवसर है भेदभाव की भावना मिटाकर पारस्परिक प्रेम व सद्भावना प्रकट करने का... एक यज्ञ है अपने कुसंस्कारों व दुर्गुणों की आहूति देने का और एक संदेश है जीवन में ईश्वरोपासना व प्रभुभक्ति बढ़ाने का ।

यह रंगोत्सव हमारे पूर्वजों की दूरदर्शिता का परम प्रमाण है जो विभिन्न प्रकार की विषमताओं के मध्य भी समाज में नये प्राणों का संचार करता है । इस पर्व के रंग-बिरंगे रंगों की खिलखिलाती बौछारें जब मानव तन पर पड़ती हैं तो हमारा मन एक सुखद अनुभूति से सराबोर हो जाता है ।

होली... एक अवसर है भेदभाव की भावना मिटाकर पारस्परिक प्रेम व सद्भावना प्रकट करने का...

लेकिन सावधान ! कहीं ये ही रंग हमारे लिये दुःखदायी न बन जायें, क्योंकि प्राचीन काल में तो लोग पलाश के फूलों से तैयार सात्त्विक रंग अथवा अबीर-गुलाल, कुमकुम-हल्दी से रंग-होली खेल लेते थे लेकिन परिवर्तनप्रधान इस युग में अनेक प्रकार के रासायनिक तत्त्वों से बने पक्के रंगों का तथा कई स्थानों पर तो वार्निश, आईलपेंट व चमकीले पेंटों का भी होली खेलने में उपयोग किया जाता है ।

चूँकि प्राकृतिक रंग तो आज सर्वसुलभ नहीं है अतः इस प्रकार के हानिकारक रंगों से होली खेलने से पहले निम्नलिखित कुछ सावधानियाँ बरतने से आप केमिकलयुक्त रंगों के दुष्प्रभाव से बच सकते हैं :

यदि कोई भी स्वजन आपको रंगने आवे तो इस बात की अवश्य सावधानी रखिये कि कहीं होली का यह रंग आँख व मुँह में न चला जावे अन्यथा आँखों की ज्योति तथा फेफड़ों व आँतों में हानि पहुँचा सकता है । अतः रंग चढ़वाते समय मुँह व आँखें बन्द रखिये ।

रंग खेलने से पहले ही अपने शरीर पर नारियल, सरसों अथवा खाद्य तेल की अच्छी तरह से मालिश कर लीजिये ताकि तेलयुक्त त्वचा पर पक्के रंगों का प्रभाव न जमे और साबुन लगाने मात्र से ही रंग निकल जाये । अपने बालों में भी तेल की अच्छी मालिश कर लीजिये ताकि रासायनिक रंगों का सिर पर भी कोई प्रभाव न पड़े ।

जो लोग बिना तेल मालिश के ही रंग खेलते हैं, उनकी त्वचा पर रासायनिक रंग गहरा प्रभाव छोड़ते हैं तथा चेहरे एवं हाथ-पैर की त्वचा पर कुछ दिनों तक जलन एवं शुष्कता बनी रहती है ।

जो लोग होली खेलने में वार्निश, आईलपेंट या अन्य किसी प्रकार के चमकदार पेन्ट्स का उपयोग करते हैं, ऐसे लोगों से सावधान रहिये । भूलकर भी उस टोली में शरीक न होइये, जहाँ इस प्रकार के घातक पदार्थों से होली खेली जाती है तथा न ही स्वयं भी इस प्रकार के घटिया व हानिकारक रंगों का इस्तेमाल कीजिये । इस प्रकार के रंग चेहरे की त्वचा के लिये अत्यधिक खतरनाक साबित हुए हैं । कभी-कभी तो पूरा चेहरा ही काला या दागदार बन जाता है । यदि किसीने ऐसा रंग आप पर जबरन लगा भी दिया तो तुरन्त ही घर पहुँचकर रुई के फाहे को केरोसिन में डुबाकर उससे आहिस्ता-आहिस्ता यह रंग साफ कर लीजिये । फिर साबुन लगाकर चेहरा धो डालिये ।

रंग खेलते समय शरीर पर आभूषण-गहने आदि धारण न करें अन्यथा भीड़ में चोरी या गुम हो जाने की संभावना बनी रहती है ।

त्वचा पर लगे पक्के रंग को बेसन, आटा, दूध, हल्दी व तेल के मिश्रण से बने उबटन द्वारा भी बार-बार लगाकर एवं उतारकर भी साफ किया जा सकता

है। यदि उबटन
साफ कर लिय
के आसपास क
घिसकर साफ
रंग घर व
खेलें ताकि घ
प्रभाव न पड़े
होली खेल
भी प्रकार की
स्थिति का स
बचने के लि
अथवा घिसे हु
पहनें।
होली पर
व शहरों में श
और नशे के म
विवेकहीन पशु
क्योंकि नशा
देता है, बुद्धि
कर देता है अ
प्रकार के अ
अतः इस पर्व
रहें।
आज यत्र
रहा है लेकिन
विश्वास करते
अपनावें। भाई
सिर्फ बहनों व
में ही होली मन
प्रवृत्ति के लोग
जो लोग
दूषित पदार्थों
बनते ही हैं,
अपने सिर प
कीचड़ आदि

है। यदि उबटन के पूर्व नींबू से उस स्थान को रगड़कर साफ कर लिया जाय तो और लाभ होगा। नाखूनों के आसपास की त्वचा में जमे रंग को भी नींबू द्वारा घिसकर साफ किया जा सकता है।

रंग घर की बजाय बरामदे या सड़क पर ही खेलें ताकि घर के भीतर रखी वस्तुओं पर रंग का प्रभाव न पड़े।

होली खेलते समय किसी भी प्रकार की लज्जा-जनक स्थिति का सामना करने से बचने के लिये फटे-पुराने अथवा घिसे हुए पतले वस्त्र न पहनें।

होली पर देहातों में भांग व शहरों में शराब पीने का अत्यधिक प्रचलन है और नशे के मद में चूर होकर देश का जवान फिर विवेकहीन पशुओं जैसे कृत्य करने लग जाता है क्योंकि नशा मस्तिष्क से विवेक का नियंत्रण हटा देता है, बुद्धि में सत्य निर्णय लेने की क्षमता का ह्रास कर देता है और वह मन, वचन व कर्म से अनेक प्रकार के असामाजिक कार्य कर गुजरता है। अतः इस पर्व पर समस्त प्रकार के नशों से सावधान रहें।

आज यत्र, तत्र, सर्वत्र उन्मुक्तता का दौर चल रहा है लेकिन जो साधक हैं, ईश्वर व गुरु में विश्वास करते हैं वे लोग शिष्टता व संयमित आचरण अपनावें। भाई सिर्फ भाइयों की ही टोली में व बहनें सिर्फ बहनों की होली में टोली मनावें। बहनें घर में ही होली मना लें तो और भी अच्छा है ताकि दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों की कुदृष्टि उन पर न पड़े।

जो लोग गंदे कीचड़ व पशुओं के मलमूत्र जैसे दूषित पदार्थों से होली खेलते हैं वे खुद तो अपवित्र बनते ही हैं, औरों को भी अपवित्र करने का पाप अपने सिर पर चढ़ाते हैं। अतः मलमूत्रवाले गन्दे कीचड़ आदि का प्रयोग न करें।

> तुम तो बस, अपने आपको हरिभक्ति के रंग से... प्रभु और प्रभु के प्यारे संतों की मस्ती से रंग देना... इतना रंगना... इतना रंगना कि रंग नाही छूटे...

होली अपने दुर्गुणों को, व्यसनों को, बुराइयों को जलाने का पर्व है... होली अच्छाइयाँ ग्रहण करने का पर्व है... होली एक संजीवनी है जो साधक की साधना को पुनर्जीवित करती है... यह समाज में प्रेम का संदेश फैलाने का पर्व है... अपनी उच्छृंखलता से... उद्दण्डता से कहीं किसी का अपमान या निन्दा न हो जाय... कहीं किसीकी कोई हानि न हो जाय... कदम-कदम पर सावधानी रखना। ऐसी परिस्थितियों से बचकर रहना जो तुम्हें शराब, गांजा, भांग आदि के जहरीले रंगों से रंगना चाहें... तुम तो बस, अपने आपको हरिभक्ति के रंग से... प्रभु और प्रभु के प्यारे संतों की मस्ती से रंग देना... इतना रंगना... इतना रंगना कि रंग नाही छूटे...

होली यानि जो हो ली। कल तक जो होना था... वह हो लिया...। आओ, आज एक नई जिन्दगी की शुरूआत करें...जो दीन-हीन है...शोषित है... उपेक्षित है...पीड़ित है... अशिक्षित है... समाज के उस अंतिम व्यक्ति को सहारा दें...। जिन्दगी का क्या भरोसा... कुछ काम ऐसे कर चलो कि हजारों दिल दुआएँ देता रहे... चल पड़ो उस पथ पर, जहाँ चलकर कुछ दीवाने प्रह्लाद बन गये...। करोगे ना हिम्मत... ? तो उठो और चल पड़ो आत्म-साक्षात्कार के पुनीत पथ पर...

> जब जब साधक सच्चे हृदय से, श्रद्धाभाव से, एकाग्रतापूर्वक सद्गुरुदेव का ध्यान करता है, प्रेम से स्मरण करता है तब दिव्य अन्तर्चक्षुवाले सद्गुरुदेव को तत्काल संवेदन होता है कि साधक की ओर से प्रार्थना एवं उन्नत विचारधारा का प्रवाह बह रहा है और हृदय को स्पर्श कर रहा है।

बीरबल की चतुराई

महाराणा प्रताप हिन्दुओं का नाक तथा क्षत्रियों का गौरव माने जाते हैं । उन्होंने वन-वन भटकते हुए अपने परिवार को घास की रोटी खिलाना कबूल कर लिया लेकिन अकबर के अनेकों प्रयत्नों के बाद भी उन्होंने मुगलों की आधीनता स्वीकार नहीं की ।

अकबर अंत तक महाराणा के स्वाभिमान व देशभक्ति को झुकाने में सफल न हो सका इसलिये उसे महाराणा से नफरत-सी हो गई । उसने उनका अपमान करने के लिए महाराणा प्रताप का एक चित्र बनवाकर अपने शौचालय में टंगवा लिया ।

अकबर के नौकर द्वारा यह बात बीरबल को ज्ञात हुई । बीरबल भारतीय संस्कृति के प्रेमी एवं राष्ट्रभक्तों के आदरकर्त्ता थे । क्षत्रियों के गौरव और भारत देश का मस्तक ऊँचा करनेवाले महाराणा प्रताप जैसे वीर का अपमान भला बीरबल कैसे सहन करते ?

बीरबल ने युक्ति लड़ाई कि साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे । वे अकबर के पास पहुँचे और पूछा : "महाराज ! क्या आपको कब्ज की शिकायत है ?"

अकबर चौंका : "ऐसा क्यों पूछते हो ?"

"महाराज ! मैंने सुना है कि आपके शौचालय में राणा प्रताप की तस्वीर है । अभी तक लोग कहते थे लेकिन मैं सच्चा नहीं मानता था, किन्तु आज मुझे विश्वास हो गया कि लोगों की बात सच्ची है ।"

"बीरबल ! बताओ, लोग क्या बात करते हैं ?"

"महाराज ! लोग ऐसा कहते हैं कि महाराणा प्रताप का नाम ही खतरनाक है । उनका नाम सुनते ही टट्टी-पेशाब छूट जाता है । आज मैंने सुना कि आपके शौचालय में महाराणा प्रताप का चित्र लगा है, इसलिये मुझे विश्वास हो गया कि लोगों की बात सच्ची है ।" बीरबल ने युक्ति लड़ाते हुए कहा ।

उसी दिन अकबर ने महाराणा प्रताप का वह चित्र शौचालय में से उतारकर दीवानखाने में लटका दिया ।

❀

संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित विद्यार्थियों के लिये किफायती मूल्य की प्रेरणादायी नोटबुक

समस्त विद्यार्थियों, अभिभावकों, शालाओं के आचार्य एवं शिक्षक भाइयों, छात्रालयों के अधीक्षकों, श्री योग वेदान्त सेवा समिति के सदस्यों तथा 'ऋषि प्रसाद' के सेवाभावी एजेन्ट भाइयों एवं स्नेही पाठकों को अत्यधिक हर्ष के साथ स्मरण कराया जाता है कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी पूज्य बापू के पावन संदेशों से युक्त पृष्ठों तथा विभिन्न प्रेरणादायी रंगीन चित्रों से आकर्षक डिजाइनों में लेमिनेशन से सुसज्ज मुख्य पृष्ठों से युक्त सुपर डीलक्स क्वालिटी के कागज पर निर्मित की गई, विद्यार्थियों के लिये प्रत्येक पृष्ठ पर दिव्य जीवन के लिये प्रेरणा, शौर्य, साहस, उत्साह एवं अनुपम शक्ति का संचार करने में सहायक हिन्दी तथा गुजराती भाषा में सुवाक्यों से युक्त, नोटबुक एवं सुपर डीलक्स फुलस्केप नोटबुक (Long Note Book) तैयार हो रहे हैं ।

अपने-अपने क्षेत्रों में विद्यार्थी भाई-बहनों को इन प्रेरणादायी किफायती मूल्य की नोटबुक (कापियाँ) का अधिक से अधिक मात्रा में लाभ मिल सके, इस हेतु एडवान्स बुकिंग करवाने तथा माल प्राप्त करने के लिये तुरन्त सम्पर्क करें :

श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५

फोन : ४८६३१०, ४८६७०२.

नोट : संस्थाओं को थोक खरीदी करने के लिये अपना लेटरहेड अहमदाबाद आश्रम में प्रस्तुत करना अनिवार्य है । माल स्टॉक में होगा तब तक प्राप्त हो सकेगा ।

ॐॐॐॐॐ

ा प्रताप का वह
नखाने में लटका

द्वारा प्रकाशित
ती मूल्य की
टबुक

कों, शालाओं के
यों के अधीक्षकों,
दस्यों तथा 'ऋषि
एवं स्नेही पाठकों
कराया जाता है
ज्य बापू के पावन
प्रेरणादायी रंगीन
नेशन से सुसज्ज
ालिटी के कागज
लिये प्रत्येक पृष्ठ
, साहस, उत्साह
में सहायक हिन्दी
युक्त, नोटबुक
क (Long Note

ई-बहनों को इन
टबुक (कापियाँ)
मिल सके, इस
ाल प्राप्त करने

श्री आसारामजी
०००५
७०२.
करने के लिये
में प्रस्तुत करना
तब तक प्राप्त

ॐॐॐॐॐ

सभी साधकों व समितियों से निवेदन है कि...

भारत एवं विश्व के अन्य देशों में संत श्री आसारामजी आश्रम की सहयोगी संस्था श्री योग वेदान्त सेवा समिति की समस्त शाखाओं के सदस्यों को अत्यधिक हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि इस वर्ष आश्रम द्वारा सभी समितियों का पंजीकरण (रजिस्ट्रेशन) किया जा रहा है, जिसमें आपकी समिति को अपने-अपने क्षेत्र के हिसाब से आश्रम द्वारा रजिस्टर्ड कोड नंबर भी प्रदान किये जायेंगे, साथ ही सदस्यों को भी कोड नंबर व परिचय पत्र दिये जायेंगे । अतः कृपया शीघ्र ही अपनी समिति द्वारा संचालित सत्प्रवृत्तियों का पूर्ण विवरण देते हुए, सम्पूर्ण जानकारी सहित सदस्यों की सूची नीचे लिखे पते पर भिजवाने का कष्ट करें । यदि आपके यहाँ महिला समिति भी है तो कृपया उसका भी विवरण भिजवायें ।

जिन स्थानों पर श्री योग वेदान्त सेवा समिति की शाखा कार्यरत नहीं है वहाँ के साधक भाई भी यदि उस क्षेत्र में समाज व राष्ट्र के आध्यात्मिक, नैतिक, शारीरिक एवं मानसिक विकास की, आश्रम द्वारा संचालित सत्प्रवृत्तियों में संलग्न होना चाहते हों तो कृपया वे भी शीघ्र ही अपने ग्राम या नगर में अन्य गुरुभाई-बहनों की सहायता से श्री योग वेदान्त सेवा समिति का गठन कर उसके सदस्यों की सूची शीघ्र ही हमारे नीचे लिखे पते पर भिजवायें ताकि उन्हें भी आश्रम द्वारा रजिस्टर्ड किया जा सके ।

कृपया समिति की जानकारी निम्न कॉलमों में भरकर भेजें :

१. ग्राम/शहर का नाम : ____________
२. तहसील : ____ जिला : ____ प्रान्त : ____
३. जनसंख्या : ____________
४. दीक्षित साधकों की संख्या : ____________
५. समीपस्थ कस्बों/गाँवों के नाम : ____________
६. समिति का गठनवर्ष व दिनांक : ____________
७. क्या आपके यहाँ पूज्यश्री का सत्संग समारोह हो चुका है ? यदि हाँ तो कब ? : ______
८. आपके शहर/गाँव के सबसे निकटस्थ पूज्यश्री के आश्रम का नाम : ____________
९. समिति द्वारा समाज में संचालित सत्प्रवृत्तियों के नाम : ____________
१०. समिति का कार्यालयीन पत्रव्यवहार का पता :
११. टेलिफोन नंबर (STD कोड सहित) : ______
१२. समिति के सदस्यों की संख्या : ____________
१३. कृपया सभी सदस्यों की जानकारी क्रमवार इस प्रकार भेजें : क्रमांक, पूरा नाम, आयु, पद, शैक्षणिक योग्यता, व्यवसाय, अभिरुचियाँ, पता, फोन, मंत्रदीक्षा प्राप्त है / नहीं है ..... ।

विशेष : उपरोक्त जानकारी साफ अक्षरों में कागज के एक ओर ही लिखकर शीघ्र भिजवायें । हमारा पता : अखिल भारतीय श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती,
अहमदाबाद - 380 005
फोन : (079) 486310, 486702.

हार्दिक निमंत्रण

अत्यधिक हर्ष का विषय है कि दिनांक : ३ अप्रैल १९९५ को अहमदाबाद आश्रम में पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में अखिल भारतीय योग वेदान्त सेवा समिति की एक बैठक का आयोजन किया जा रहा है जिसमें 'ऋषि प्रसाद' के सभी सेवाधारी भाइयों एवं श्री योग वेदान्त सेवा समिति की समस्त शाखाओं को हार्दिक निमंत्रण है ।

कृपया अपने साथ आपकी समिति द्वारा संचालित सत्प्रवृत्तियों की प्रगति-रिपोर्ट अवश्य लावें ।

उन्नत जीवन और साधना में सहायक साधनों का आकर्षण भला किसको नहीं होगा ?

वड़ी वड़ी वानों में आश्रम के साधक साहित्य, संतकृपा चूर्ण, कैसेट आदि भरकर गाँव-गाँव, शहर-शहर पहुँचाते हैं।

पू. वापू का सत्साहित्य, कैसेट्स, चूर्ण, फोटोग्राफ्स आदि आश्रम के स्टॉल पर किफायती मूल्य से उपलब्ध है।

करते थे वह
इन्दौर, भोपा
रहते हुए सत
विडियो कैसे

पूज्यश्री का
परायों को अ
पूज्यश्री के व
घर में निवा

बालक वृद्ध अ

गलीला : ४३

र पहुँचाते हैं ।

४४ : योगलीला परम गुरु पूज्यपाद स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज ज्ञान-प्रसार का जो कार्य पैदल चलकर करते थे वह कार्य अब जेट युग में अद्यतन साधनों का उपयोग करके किये जाते हैं । अहमदाबाद, बड़ौदा, सुरत, इन्दौर, भोपाल, रतलाम, उदयपुर, अजमेर, मेहसाना, पालनपुर आदि अनेक शहरों में पूज्यश्री के साधक घर में रहते हुए सत्संग की योजनाएँ चलाते हैं । गाँव-गाँव में, गली-गली में, देश में और विदेश में अब लाखों लोग विडियो कैसेट के द्वारा पूज्यश्री के दर्शन एवं सत्संग का लाभ लेते हैं और करोड़ों लोग पूज्यश्री से परिचित बने हैं।
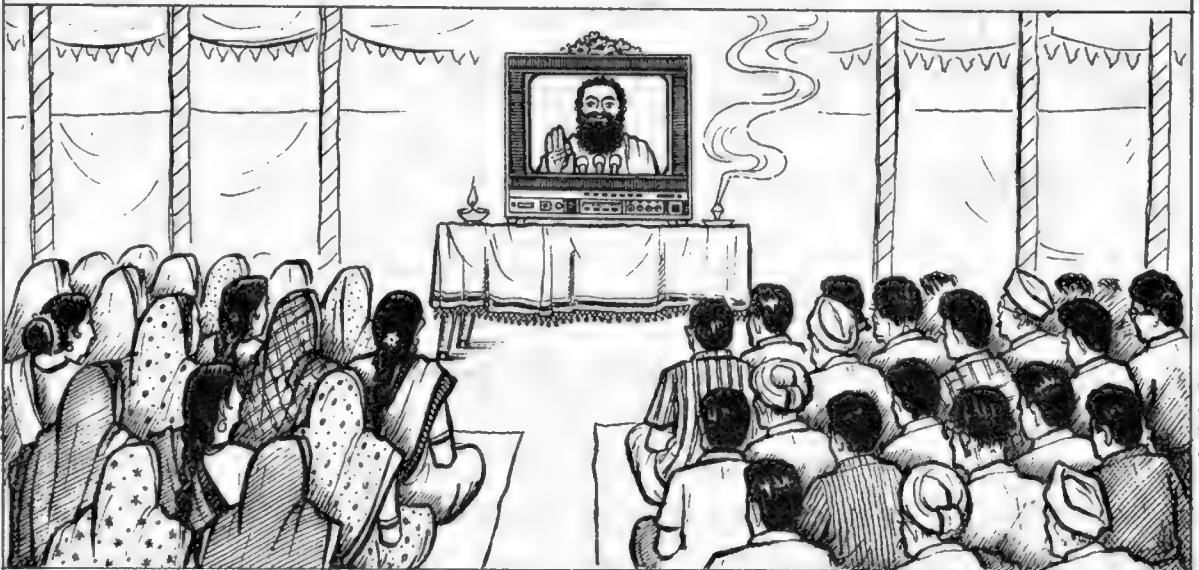
पूज्यश्री का आत्मिक दिव्य प्रेम, सरल, मधुर वाणी और योगसामर्थ्य ऐसा मोहक है कि वे जहाँ जहाँ जाते हैं वहाँ परायों को अपना बना लेते हैं... अपनों को उत्साहित करके परमात्मा के पथ पर अग्रसर कर देते हैं । जो लोग पूज्यश्री के दर्शन करते हैं और सत्संग में आते हैं वे आकांक्षा करते हैं कि पूज्यश्री हमारे गाँव में पधारें और हमारे घर में निवास करें ।इस निर्दोष प्रेम ने जन जन के घर में और अन्तर में पूज्यश्री का स्थायी प्रवेश करा दिया है।

बालक वृद्ध और नरनारी, सभी प्रेरणा पायें भारी; एक बार जो दर्शन पायें, शांति का अनुभव हो जाये. (क्रमशः)

त्रिफला चूर्ण

आँवला, बहेड़ा व हरड़ का चूर्ण समान मात्रा में मिलाकर त्रिफला तैयार कीजिये । यह एक से आठ ग्राम तक आवश्यकतानुसार खाया जा सकता है ।

इस त्रिफला चूर्ण को घी तथा शक्कर के साथ मिलाकर कुछ माह खाने से नेत्र रोग दूर होते हैं ।

> त्रिफला आयुर्वेद का श्रेष्ठ एन्टीसेप्टिक द्रव्य है। इसके पानी से घाव धोने से एन्टीसेप्टिक की कोई आवश्यकता नहीं रहती है ।

त्रिफला चूर्ण पानी में उबालकर, शहद मिलाकर पीने से चरबी कम होती है । इसीमें यदि पीसी हुई हल्दी भी मिला ली जाय तो पीने से प्रमेह मिटता है ।

आँवला, बहेड़ा व हरड़ की बराबर मात्रा को रात्रि में मिट्टी के कोरे बर्तन में पानी में गलाने रखकर प्रातःकाल वह पानी आँखों में छींटने से आँखों का दर्द दूर होता है । एक कहावत प्रसिद्ध है कि :

आँखे त्रिफला दाँते लूण ।
पेट न भरिये चारे खूण ॥

आँखों के लिये त्रिफला और दाँतों के लिये नमक एक महान् औषध है । ठूँस-ठूँसकर पेट को भोजन से न भरें । पेट भरने के लिये नहीं, जीने के लिये खाएँ ।

> मार्ग में चलकर थके हुए, बलहीन, कृश, उपवास से दुर्बल बने हुए को तथा गर्भवती स्त्री एवं नये बुखारवाले को त्रिफला नहीं लेना चाहिये ।

त्रिफला आयुर्वेद का श्रेष्ठ एन्टीसेप्टिक द्रव्य है । इसके पानी से घाव धोने से एन्टीसेप्टिक की कोई आवश्यकता नहीं रहती है ।

दाद, खाज, खुजली, फोड़े-फुन्सी आदि चर्मरोगों में सुबह-शाम ६ से ८ ग्राम त्रिफला चूर्ण लेना हितकारी माना गया है ।

आँख के तमाम रोगों के लिये यह अकसीर औषध है । नेत्रों में दर्द, ज्योति मंद, जलन, खील आदि रोगों में सुबह-शाम नियमित त्रिफला चूर्ण लेने से तथा त्रिफला के पानी से नेत्र प्रक्षालन करने से नेत्र संबंधी समस्त विकार मिटते हैं व नेत्रों में तेज बढ़ता है ।

जिन लोगों को बार-बार मुँह आने की बीमारी हो अर्थात् मुख पाक हो जाता हो वे प्रतिदिन रात में छः ग्राम त्रिफला चूर्ण पानी के साथ खाकर त्रिफला के ठंडे पानी से कुल्ले करें ।

मूत्रमार्गगत रोग अर्थात् प्रमेह आदि में शहद के साथ त्रिफला लेने से अत्यंत लाभ मिलता है ।

जीर्णज्वर में त्रिफला २ से ३ ग्राम दूध या पानी के साथ तथा पांडुरोग (पीलिया) में सुबह ४ से ६ ग्राम चूर्ण दूध या गौमूत्र से लेना चाहिये ।

कामला रोग में गौमूत्र या शहद के साथ २ से ४ ग्राम त्रिफला देने से एक माह में यह रोग मिट जाता है ।

गरमी से त्वचा पर हुए चकतों पर त्रिफला की राख शहद में मिलाकर लगाने से राहत मिलती है। मुँह के छालों में भी इसी प्रकार लगाकर थूक से मुँह भरा जाने पर उससे ही कुल्ला करने से छालों से राहत मिलती है ।

त्रिफला के चूर्ण में खेर की छाल का क्वाथ, भैंस का घी तथा वायवडिंग का चूर्ण मिलाकर नियमित सेवन करने से भगंदर मिटता है ।

भोजन के बाद त्रिफला लेने से अन्न के दोष तथा वात-पित्त-कफ से उत्पन्न रोग मिटते हैं तथा कब्जियत भी नहीं रहती । मलावरोध दूर होता है ।

इसके अतिरिक्त भी अनेक छोटे-मोटे रोगों में त्रिफला औषध रूप सहायक होता है ।

मार्ग में चलकर थके हुए, बलहीन, कृश, उपवास से दुर्बल बने हुए को तथा गर्भवती स्त्री एवं नये बुखारवाले को त्रिफला नहीं लेना चाहिये ।

त्रिफला में यदि पिप्पली चूर्ण का योग हो जाय तो उसकी गुणवत्ता बहुत बढ़ जाती है । त्रिफला तीन भाग व पिप्पली एक भाग मिलाकर चूर्ण का शहद के साथ सेवन करने से खाँसी, श्वास, ज्वर आदि में लाभ होता है, दस्त साफ हो जाता है व जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है ।

❀

आप क्या खा रहे हैं ?

आज बदलते परिवेश में भारतीय सभ्यता में तीव्रता से पाश्चात्य संस्कृति के दोषों का समावेश होता जा रहा है । आचार-विचार, वेशभूषा, खान-पान सब कुछ विदेशी तर्ज पर ही अपनाया जा रहा है । जैसे- आजकल सब जगह भोजन में अण्डे एवं माँस का प्रचलन व माँग बढ़ती ही जा रही है जिसके फलस्वरूप अनेकों बूचड़खानों में प्रतिदिन हमारी संस्कृति की प्रतीक गौ माता एवं अन्यान्य निरीह मूक पशुओं का वध हजारों की संख्या में किया जा रहा है । अण्डों की पैदावार बढ़ाने के लिए शासन ऋण पर ऋण दिये जा रहा है । यह देश का दुर्भाग्य है कि इन्सान के बच्चे पैदा करने पर प्रतिबंध लगाया जा रहा है तथा मुर्गियों के बच्चे पैदा करने के लिए उद्योग खोले जा रहे हैं ।

अण्डे एवं माँस के सेवन से कितनी हानि होती है शायद इसका उन्हें पता नहीं । अमेरिका के डॉक्टरों ने प्रमाणित कर दिया है कि जो व्यक्ति माँस या अण्डे खाते हैं उनके शरीर में 'रिस्पटरों' की संख्या में कमी हो जाती है जिससे रक्त के अन्दर कोलेस्टेरोल की मात्रा अधिक हो जाती है । इससे हृदयरोग, गुर्दे के रोग, पथरी आदि रोगों में वृद्धि होती है ।

माँस में मूत्राम्ल (यूरिक एसिड) नामक विष होता है जो शरीर में एकत्रित होकर सिरदर्द, हिस्टीरिया, अनिद्रा, अजीर्ण, यकृत-लीवर के रोग, डायाबिटिज, किडनी, केंसर, भगंदर, शोथ, पीलिया, खुजली, आंतों का शूल, निमोनिया, क्षयादि रोगों की उत्पत्ति में सहायक होता है ।

ब्रिटेन के चिकित्सकों द्वारा यह प्रतिपादित किया गया है कि शाकाहारी लोगों में संक्रामक व घातक बीमारियाँ, माँसाहारियों की अपेक्षा कम पाई जाती हैं तथा शाकाहारियों में स्वस्थता, सौष्ठवता, शांत प्रकृति एवं चिंतनशील होने के गुण होते हैं । इसी कारण पश्चिमी देशों में दिल का दौरा, केंसर, ब्लडप्रेशर, मोटापा, गुर्दे के रोग, कब्ज, संक्रामक रोग आदि बीमारियाँ भारत, जापान, नेपाल आदि देशों की अपेक्षा अधिक ही होती हैं क्योंकि वहाँ के लोग इन देशों की अपेक्षा अधिक माँसाहारी होते हैं ।

अरस्तू, सुकरात, प्लेटो, रुसो, डॉ. राधाकृष्णन् जैसे विश्वप्रसिद्ध दार्शनिक, शेक्सपियर, मिल्टन, थोरो, बनार्ड शॉ, रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे साहित्यकार, न्यूटन, आइन्स्टीन, बैंजेमिन फ्रेंकलिन, सी. वी. रमण जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक भी शाकाहारी रहे हैं ।

बैंजेमिन फ्रेंकलिन का कहना है कि 'सात्त्विक भाव और तीव्र कल्पनाशक्ति को उत्पन्न करने का एकमात्र उपाय माँस-रहित आहार ही है । बैल और घोड़ा भी तो माँस न खाते हुए बलवान होते हैं ।'

माँस में शरीर को पुष्ट करनेवाले तत्त्व हैं, यह धारणा महज एक तर्क है । एक अण्डे से अधिक

पौष्टिक तत्त्व ५० ग्राम मूँगफली दाने में होते हैं। २०० अण्डों में जितना विटामिन 'सी' नहीं होता उतना मात्र एक आँवले में होता है। आठ किलो अण्डों से भी अधिक पौष्टिक मात्र एक किलो गेहूँ, सोयाबीन, दूध पाऊडर, मेथी, मूँगफली, मसूर एवं मूँग आदि होते हैं। दाल, रोटी, चावल के मिश्रण में सभी आवश्यक 'एमिनो एसिड्स' होते हैं।

लंदन के संशोधनकार श्री स्टेनली डेविडनशन तथा आर. पासमोर की मान्यता है कि शाकाहार प्रोटीन का यथेष्ट खजाना है। आयुर्वेद के ज्ञाता चरक ने भी शुद्ध निरामिष आहार का आग्रह कर शरीर तथा स्वास्थ्य स्थिर रहे, इतनी ही मात्रा में भोजन करने को कहा है।

माँस को वैसे भी संपूर्ण मानवीय आहार नहीं माना जाता है क्योंकि माँस के साथ अन्य वस्तुएँ भी खानी पड़ती हैं। केवल माँस खानेवाला इन्सान तो दुनिया भर में नहीं है जबकि केवल शाकाहार लेनेवाले करोड़ों लोग हैं। अतएव स्पष्ट है कि माँसाहार की आवश्यकता नहीं है।

कई लोग अण्डे को शाकाहारी बताकर जनता में एक भ्रामक प्रचार कर रहे हैं। उनका कहना है कि ये अण्डे बिना मुर्गे के संयोग के उत्पन्न होते हैं। अतः शाकाहारी हैं। किन्तु यह बात बिल्कुल गलत है। अण्डे में जीव होता है इस बात का स्पष्ट उल्लेख अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक फिलिप जेस्केम्बले ने भी किया है।

मुर्गी यदि मुर्गे के संसर्ग में न आये तो भी अपनी जवानी में अण्डे दे सकती है। चौंकिये नहीं, यह अटल सत्य है लेकिन ऐसे अण्डों की तुलना स्त्री के रजःस्राव से की जाती है। जिस प्रकार स्त्री को मासिक धर्म होता है उसी प्रकार मुर्गी को भी यह धर्म अण्डों के रूप में होता है। ऐसे अण्डे मुर्गी की आंतरिक गंदगी का परिणाम है। आजकल इन्हीं अण्डों को व्यावसायिक स्वार्थवश लोग शाकाहारी अण्डों के नाम से पुकारते हैं। किन्तु ये वनस्पति से नहीं, किसी जीव से ही पैदा होते हैं अतः शाकाहारी हो ही नहीं सकते।

आज प्रचार माध्यमों से युवाओं को गुमराह कर माँसाहार के लिए प्रेरित किया जा रहा है। जो कि भारत जैसे संस्कृति-प्रधान देश में उचित नहीं है। ब्राह्मण और वैश्य जैसे उच्च कुलों के बच्चे भी होटलों में जाकर अण्डा-माँस भक्षण करना विलासिता, वैभव व आधुनिकता का पर्याय समझ रहे हैं। जैसा अन्न खाएँगे, वैसा ही चित्त पर उसका प्रभाव पड़ेगा। निरीह पशुओं को मारकर और कई बार तो बीमारी से मरे हुए पशुओं तक का माँस लोग बाजार में बेच देते हैं और फिर इन्हें खानेवाले बीमार न होंगे तो क्या होगा ?

अतः इससे सावधान रहें। अण्डा, माँस, मछली आदि स्वयं भी न खायें तथा न ही इन दूषित पदार्थ खानेवालों का संग करें। जो माँसाहारी हैं, वे अपने हाथों से अपना विनाश कर रहे हैं।

अहिंसा और सर्वात्मभाव

एक बार रबिया कहीं जंगल में खड़ी थी। जंगली जानवर और पक्षी मित्रभाव से उन्हें घेरे खड़े थे। इतने में प्रसिद्ध धर्मोपदेशक और विद्वान फकीर हसन बसरी उधर से कहीं आ निकले। उन्हें देखते ही पशु-पक्षी भयभीत होकर भाग गये। हसन के दिल को चोट लगी। उसने पूछा : "मुझे देखकर पशु-पक्षी क्यों भाग खड़े हुए ?"

रबिया ने पूछा : "तुमने क्या खाया था ?"

हसन : "माँस।"

रबिया : "जब तुम उन्हें खा जाते हो तो वे क्यों न तुमसे डरकर भागें ?"

रबिया की अहिंसा और सर्वात्मभाव से फकीर हसन की आँखें खुल गयीं।

कृपासिंधु मेरे गुरुदेव

मैं उज्जैन (म.प्र.) में शिक्षिका हूँ । बचपन से ही मुझे समर्थ सद्गुरु की तलाश थी लेकिन कोई ऐसे सत्पुरुष मुझे उज्जैन नगरी में मिले ही नहीं । महिला होने के कारण मैं बाहर न जा सकी लेकिन इस पावन तीर्थनगरी में आने वाले महात्माओं के सत्संग में अवश्य जाती थी ताकि कहीं मुझे सद्गुरु मिल जाय । मेरा दुर्भाग्य था कि मुझे कहीं भी आत्मिक आनंद की झलक न मिली ।

सिंहस्थ में मैंने अनेक मठों, सम्प्रदायों में जाकर सद्गुरु की खोज की लेकिन निराशा ही मिली । मैंने भगवान महाकालेश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा : "क्या मुझे बिना गुरु के ही मरना पड़ेगा ? क्या इतने विशाल कुंभ में एक भी सच्चा सद्गुरु नहीं है ?"

मेरी प्रार्थना भूतभावन भोलेनाथ ने स्वीकार ली और संयोगवशात् मैं एक दिन सद्गुरु की तलाश में संत आसारामनगर में पहुँची । इस अत्यधिक विशाल प्रांगण और लाखों श्रद्धालुओं से भरी भीड़ ने सहज ही मेरे मन को आकर्षित कर लिया क्योंकि पूरे सिंहस्थ क्षेत्र में कहीं इतनी जनता नहीं दिखी, जितनी यहाँ मौजूद थी । जब सत्संग-पांडाल में पहुँची तो यह देखकर और दंग रह गई कि पूरा पांडाल लाखों श्रोताओं की भीड़ से खचाखच भरा हुआ है लेकिन कहीं कोई आवाज नहीं कर रहा है । सभी मानो ध्यानमग्न हो सत्संगपीयूष का पान कर रहे हैं ।

जब सत्संग-पांडाल में पहुँची तो यह देखकर और दंग रह गई कि पूरा पांडाल लाखों श्रोताओं की भीड़ से खचाखच भरा हुआ है लेकिन कहीं कोई आवाज नहीं कर रहा है ।

मैं भी चुपचाप बैठ गई । संत श्री आसारामजी बापू व्यासपीठ से विशाल जनमेदिनी को संबोधित कर रहे थे । पूज्यश्री की वाणी में मुझे आत्मिक आनंद का परम सुख मिला । इतना ही नहीं, मेरे मन में उठी अनेक जिज्ञासाओं के भी मुझे उस एक ही सत्संग में उत्तर मिल गये । मेरी मंजिल मुझे करीब नजर आ रही थी । मैंने मन ही मन पूज्यश्री को गुरु के रूप में स्वीकार लिया व पूज्यश्री के सुन्दर चित्र के सम्मुख 'हरि ॐ' मंत्र का जप व प्राणायाम भी शुरू कर दिया । एकलव्य की भाँति मैं नित्य इसका अभ्यास कर पूज्यश्री के सत्संग में जाने लगी ।

एक दिन गीता-माहात्म्य पाठ के दौरान अचानक मेरे मुँह से यह श्लोक निकल पड़ा :

सर्वो शास्त्रो गावो दोग्धा सद्गुरु आशारामः ।
वयं श्रोताः सुधीर्भोक्ताः दुग्धं वचनामृतं महत् ॥

और मेरे अहोभाग्य कि आठ मई को कुम्भ मेले में ही पूज्यश्री से मुझे मंत्रदीक्षा मिल गई । उस पल का स्वर्गीय आनंद मैं आज तक विस्मृत नहीं कर सकी हूँ ।

अगस्त १९९२ में एक दिन मेरे नाक, कान व मुँह से दिन में कई-कई बार खून स्वतः ही निकलने लगा जिसे देखकर मुझे केंसर होने का भय लगने लगा । रोग बढ़ता ही गया किन्तु मैं यम-यातना सहने चिकित्सालय में न जाकर अपने गुरुदेव से ही प्रार्थना करने लगी । मैं इतनी अस्वस्थ होकर भी उज्जैन समिति द्वारा आयोजित गुरुवार के रात्रि कीर्तन में गई । कीर्तन के समय मुझमें ऐसी तल्लीनता आई कि मैं ध्यान में खो गई । ध्यान में मुझे साक्षात् गुरुदेव के दर्शन हुए, जिनके चरणों में

बैठकर मैंने प्रार्थना की कि : "हे सद्‌गुरुदेव ! आपश्री की कृपा से हजारों-हजारों लोगों को लाभ मिला है । मुझे भी इस रोग से मुक्त कीजिये प्रभु ! मैं २१ दिन का अनुष्ठान करूँगी ।"

काफी समय तक मुझे ध्यान लगा रहा । कीर्तन-समाप्ति के बाद घर आई । दूसरे दिन सुबह उठकर देखा कि न तो नाक से खून बह रहा है न ही मुँह से । कान में भी अंगुली डालकर जोर से हिलाने पर भी खून नहीं निकला । यह मेरे सद्‌गुरु के कृपाप्रसाद का ही प्रताप नहीं तो और क्या है ? मैं पूर्ण स्वस्थता का अनुभव करती हुई उसी दिन २१ दिनों के अनुष्ठान में संलग्न हो गई ।

सचमुच गुरु हैं दीन दयाल ।
सहज ही कर देते हैं निहाल ॥

ऐसा ही एक अनुभव गत वर्ष पंचेड़ आश्रम (रतलाम) में पूज्यश्री के जन्मदिवस के शिविर में हुआ । मैंने स्टॉल से एक पेंडल खरीदकर गले में बांध लिया । उसमें आगे की ओर पूज्यश्री की तस्वीर देखकर मुझे शंका हुई कि मेरी अज्ञानी साथी बहनें इसे मेरे गले में देख हँसी उड़ाएँगी लेकिन शाम हो आई थी, अतः मैंने उसे पलटना छोड़कर गले में ही पड़ा रहने दिया । सुबह जब उठकर देखा तो मेरे आश्चर्य की सीमा ही न रही ! पेंडल पर से बापू का फोटो गायब था और दोनों तरफ ॐ ही ॐ रह गया था । बापूजी ने मेरी दुविधा दूर कर यह साबित कर दिया कि ब्रह्मवेत्ता सद्‌गुरु ही ॐ स्वरूप होते हैं । उनमें और ॐकार में कोई भेद नहीं होता ।

मेरा तीसरा अनुभव है कि मेरी ज्येष्ठा पुत्री को प्रसव के समय लेडी डॉक्टर ने बड़े आपरेशन की बात कही तो मैं घबरा उठी लेकिन उसीके पलंग पर बैठकर गुरुदेव के दिये मंत्र का जप करने लगी तो उसकी प्रसव-वेदना भी सामान्य हो गई और आधे घंटे के बाद ही उसने एक स्वस्थ कन्या को जन्म दिया जो कि अब डेढ़ वर्ष की हो चुकी है ।

मैं अपने प्यारे दुःखभंजन, करुणानिधान सद्‌गुरु की लीलाओं का क्या वर्णन करूँ और कैसे करूँ ? हर शब्द उनकी महिमा के आगे तुच्छ है । वे शिष्य धन्य हैं, जिन्हें ईश्वर के समान करुणा-कृपा बरसाने वाले तत्त्ववेत्ता पूज्य बापूजी जैसे परम गुरु मिले हैं ।

पूज्य संत श्री आसारामजी की
महिमा किस विधि गाऊँ ।
मैं बार-बार सिर नवाऊँ
मैं बार-बार सिर नवाऊँ ॥

- अ. सौ. कमला शर्मा, अध्यापिका ।
२९, ब्राह्मण गली, बहादुरगंज, उज्जैन (म.प्र.)

❀

अलौकिक आनंद का अनुभव

मुझे आठ दिन के सूरत प्रवास के समय पूज्य बापूश्री ने अपने श्रीचरणों में स्थान देकर जो आत्मसुख प्रदान किया है, वह मेरे हृदय में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया है । जिस अलौकिक आनंद का अनुभव मैंने आश्रम के वातावरण में किया, ऐसा जीवन में कभी अन्यत्र अनुभव करने को नहीं मिला । यह सब गुरुदेव की अहैतुकी अनुकम्पा से ही संभव हो पाया है । जीवन जीने का आदर्श मार्ग आपके जीवन में भी प्रशस्त हो, यही मेरी आशा और उद्देश्य है ।

-डॉ. केदारनाथ मोदी, चेयरमेन.
मोदी इन्टरप्राइसेस, मोदीनगर (यू.पी.)

❀

जिसके हृदय का अधिकार गुरुभक्ति ने ले लिया है उसे तीर्थाटन से क्या काम ? उसे मंदिरों में जाने की क्या आवश्यकता ? उसका मन ही मंदिर बन जाता है । उसका तन शिवालय बन जाता है ।

संस्था समाचार

दिसम्बर के शिविर में भाग लेने आये हजारों साधकों एवं हजारों विद्यार्थियों को तापी के सुरम्य तट पर आत्मोत्थान की दिव्य कुँजियाँ प्रदान करनेवाले पूज्य गुरुदेव ने दिनांक २ जनवरी १९९५ को सूरत से प्रकाशा (महाराष्ट्र) की ओर प्रस्थान किया ।

नावली : सतपुड़ा की सुरम्य पर्वत-शृंखलाओं के तट पर बसा, महाराष्ट्र के संत दगाजी महाराज की साधना-स्थली 'नावली' में पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में दिनांक : ३ जनवरी १९९५ को एक विशाल भंडारा आयोजित हुआ जिसमें करीब ५० हजार से अधिक आदिवासी भाई-बहनों ने भाग लिया । इस विशाल भंडारे में अत्यधिक निर्धन परिस्थिति के लोगों को वस्त्र, कम्बल एवं आर्थिक सहायता भी प्रदान की गई । पूज्यश्री की पीयूषवर्षी वाणी का श्रवण कर आदिवासी लोगों ने धर्मयुक्त जीवन-यापन करने का संकल्प लिया ।

प्रकाशा : दक्षिण काशी के नाम से सूर्यपुत्री तापी के तट पर बसा, एक तीर्थनगरी के रूप में विख्यात, महाराष्ट्र के धुले जिले का एक छोटा-सा कस्बा प्रकाशा, संत श्री आसारामजी आश्रम की यहाँ स्थापना होने से धर्म के क्षेत्र में और भी अधिक जागृत हो चुका है । आसपास के सैकड़ों ग्रामों में प्रकाशा आश्रम एवं श्री योग वेदांत सेवा समितियों द्वारा विभिन्न सत्प्रवृत्तियाँ संचालित की जाती हैं ।

दिनांक : ५ से ८ जनवरी तक पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में आयोजित गीता-भागवत सत्संग समारोह में प्रतिदिन एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया । मंडप को एक विशाल रूप दिया गया था किन्तु भक्तों की भीड़ ने उसकी विशाल भव्यता को भी फीका कर दिया । जितने भक्त पांडाल में भरे होते थे, उतने ही भक्त स्थानाभाव के कारण बाहर बैठकर सत्संग का लाभ लिया करते थे ।

आयोजकों द्वारा आगंतुकों को उपलब्ध कराई जानेवाली सुविधाओं की सर्वत्र प्रशंसा की जा रही थी । घनघोर घटाएँ व बादलों की भयानक गर्जनाएँ आसमान में छाई रहने के बावजूद भी भव्य सत्संग हुआ । दिन में प्रकाशा के चारों ओर मूसलाधार बारिश होती रही लेकिन प्रकाशा में सत्संग के समय मौसम खुला ही रहा । रात्रि में कभी पानी आया भी तो सबके घर पहुँच जाने के बाद ही । प्रकाशा क्षेत्र के लोग पूज्यश्री की इस महान् महिमा को देखकर आश्चर्यचकित रह गये ।

अंतिम दिवस पूज्यश्री से मंत्रदीक्षा प्राप्त करने पहुँचे गुरुभक्तों की भीड़ के आगे तो मानो प्रकाशा का आश्रम ही छोटा पड़ गया । करीब पाँच हजार लोगों ने पूज्यश्री से मंत्रदीक्षा प्राप्त कर जीवन जीने का नया व सच्चा मार्ग प्राप्त किया ।

दिनांक : ९ जनवरी को पूज्य गुरुदेव प्रकाशा

से अकलकुआ तहसील के खापर ग्राम में भंडारा व सत्संग कार्यक्रम के लिये नियत समय पर रवाना हुए लेकिन मार्ग में स्थान-स्थान पर एकत्रित स्वागतातुर विशाल भीड़ के कारण पूज्यश्री के मिनी सत्संग का लाभ केदारेश्वर खांडसारी मिल्स निम्बोरा फाटा जि. सूरत के श्रमिकों तथा आमलाड़, जि. धुले (महा.) एवं आश्रवा, जिला सूरत (गुजरात) के नागरिकों को भी मिला ।

खापर में इसी दिन विशाल भंडारा कार्यक्रम हुआ जिसमें साठ हजार से अधिक आदिवासी एवं अन्य भाविक भक्तों ने भाग लेकर अपना जीवन धन्य किया । पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में अनेक नवयुवकों ने यहाँ व्यसनमुक्ति का संकल्प लिया । नारी उत्थान आश्रम की साध्वी बहनों तथा संत श्री आसारामजी आश्रम के सेवाभावी साधक भाइयों ने इस विशाल भंडारे में पूज्यश्री की उपस्थिति में आदिवासी भाई-बहनों को भोजन के अतिरिक्त नगदी रूपया, कम्बल, वस्त्र व फल आदि वितरण किया ।

अहमदाबाद : दिनांक १३ से १५ जनवरी तक अहमदाबाद आश्रम में उत्तरायण (मकर-संक्रान्ति) पर्व का ध्यान योग साधना शिविर आयोजित हुआ जिसमें देश-विदेश से हजारों की संख्या में आत्मकल्याण के इच्छुक साधकों ने सम्मिलित होकर साधना के विभिन्न गुप्त रहस्यों को समझते हुए, आत्म-परमात्मतत्त्व की गहराइयों में गोता लगाते हुए साधना की ऊँचाइयों को प्राप्त किया ।

दिनांक १६ जनवरी को पूर्णिमा व्रतधारियों ने भी अलसुबह यहीं पूज्यश्री के पावन दर्शन कर ही अन्न-जल ग्रहण किया । भारत भर में हजारों की संख्या में पूर्णिमा व्रतधारी हैं जो प्रति पूर्णिमा को पूज्य गुरुदेव के दर्शन करके ही अन्न-जल ग्रहण करते हैं । चाहे पूज्यश्री भारत के किसी भी कोने में क्यों न हों, ये दीवाने अपने सद्गुरु की खोज करते-करते वहाँ पहुँच ही जाते हैं । इस पूर्णिमा पर तो बड़ौदा समिति के सैकड़ों पूर्णिमा व्रतधारी भाई-बहन बड़ौदा से अहमदाबाद आश्रम तक पैदल चलकर गाँव-गाँव में व सड़क पर हरिनाम संकीर्तन की धूम मचाते हुए पूज्यश्री के दर्शनार्थ आये ।

कोटड़ा : गुजरात के इस आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में दिनांक : १९ जनवरी को कोटड़ा में एक विशाल भंडारे का आयोजन आश्रम की ओर से किया गया, जिसमें निर्धनों में फल, मिठाइयाँ, अन्न, वस्त्र, कंबल तथा आर्थिक सहायता प्रदान की गई । विश्ववंदनीय इन असाधारण विभूति पूज्य बापू को अपने बीच पाकर आदिवासियों की खुशी का ठिकाना न रहा । पूज्यश्री से जीवन के आध्यात्मिक उत्थान के विभिन्न सूत्रों को कोटड़ावासियों ने खूब-खूब प्रेम से प्राप्त किया ।

दिनांक : २१ जनवरी को पूज्यश्री वायुमार्ग द्वारा अहमदाबाद से लुधियाना के लिये रवाना हुए ।

लुधियाना : गुरुओं की धरती पंजाब के लुधियाना शहर में दिनांक : २२ से २९ जनवरी ९५ तक पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में अत्यधिक विशाल गीता- भागवत सत्संग समारोह का आयोजन हुआ । स्थानीय भारत चौक में एक लाख लोगों के बैठने के लिये सुन्दर व चित्ताकर्षक झाँकियों से सजाया गया विशाल सत्संग-पांडाल भी वहाँ के गुरुभक्तों एवं धर्मप्रेमी जनता के कारण छोटा पड़ गया ।

लुधियाना के इस विशाल सत्संग समारोह में हिमाचल प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री शांताराम के अलावा पंजाब राज्य के अनेक गणमान्य अधिकारियों एवं बुद्धिजीवी वर्ग ने उपस्थित होकर पूज्यश्री के उपदेशामृतों का रसपान किया ।

लुधियाना की हरिकथा आयोजन समिति द्वारा सत्संगी भाई-बहनों के आवास एवं भोजन की निःशुल्क तथा शानदार व्यवस्था की गई थी । पूज्य गुरुदेव के लिये तैयार की गई, प्राकृतिक दृश्यों को जीवंत रूप में प्रस्तुत करनेवाली व्यासपीठ की सुन्दरता तो देखने के काबिल थी ।

सिखधर्म के अनुयायियों को तो पूज्यश्री के प्रथम दर्शन व श्रवण से ही ऐसी अनुभूति हुई मानो साक्षात् नानकजी ही पूज्यश्री के रूप में पुनः पंजाब में पधारे हैं । आखिरी दिन पंजाब के प्यार के प्रतीक स्वरूप में पूज्य गुरुदेव को पंजाबी पगड़ी भेंट की गई जिसे पहनकर ही पूज्यश्री ने सत्संग किया । संतों के प्रति पंजाबवासियों का आदरभाव व श्रद्धा देखकर सभी ने यही कहा कि मानो पंजाबवासियों ने गुरुनानक की इस वाणी को अपने जीवन में उतार लिया है कि -

साध संगत की सेवा प्रभु की सेवा ।

इलाहाबाद : लुधियाना के बाद अर्धकुम्भ में तीर्थराज प्रयाग (इलाहाबाद) में पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में दिनांक : १ से ४ फरवरी ९५ तक विशाल सत्संग समारोह का आयोजन हुआ ।

इस कुम्भ में हजार-हजार किलोमीटर दूर से लोग कुम्भ के सत्संग की वर्षा में स्नान करने आये थे । संगम में स्नान के बाद भी हजारों लोग केवल इसी इन्तजार में रुके हुए थे कि पूज्यश्री के दर्शन व सत्संग का लाभ मिले ।

आखिरी कोने में विशाल सत्संग मंडप तैयार किया गया था लेकिन पहले दिन की पहली सभा में ही मंडप छोटा पड़ गया । भक्त श्रोताओं को पूज्यश्री की वाणी सुनकर ऐसा लगा कि कुम्भ का अमृत त्रिवेणी स्थल पर ही नहीं गिरा, अपितु पूज्यश्री की वाणी से प्रयागराज की धरती पर भी निःसृत हुआ है । गुरुदेव के सत्संग-समाप्ति के बाद बाहर निकलते लोग कहते थे कि इन संत की वाणी में हमें साक्षात् तीर्थराज प्रयाग के दर्शन हुए हैं ।

तुलसीदासजी ने ठीक ही कहा है :

मुद मंगलमय संत समाजू ।
जो जग जंगम तीरथराजू ॥

संत समाज स्वयं चलते-फिरते तीर्थराज हैं । इलाहाबाद हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस के साथ अनेकानेक राजनेता व अधिकारियों ने पूज्यश्री के मुखारविन्द से प्रस्फुटित पावन सत्संग सरिता में अवगाहन कर अपना जीवन धन्य किया ।

इसी दौरान सत्संग मंडप के पृष्ठ भाग में 'संत मिलन समारोह' भी सम्पन्न हुआ जिसमें मणिरामपुर छावनी, अयोध्या के महंत नृत्यगोपालदासजी, नैमिषारण्य के विवेकानंद आचार्यजी, गीता आश्रम, ऋषिकेश के शांतानंदजी, ऋषिकेश के ही विश्वगुरुजी आदि अनेक प्रमुख संतों ने भाग लेकर भारतवर्ष के उज्वल भविष्य के संबंध में विचारविमर्श किया ।

संत श्री आसारामजी आश्रम की ओर से जहाँ साधु-संतों व गरीबों को प्रसाद, दक्षिणा, कम्बल, कपड़े, सत्साहित्य आदि भेंट किये गये, वहीं श्री नारायण स्वामीजी द्वारा भी कुम्भ क्षेत्र में साधु-संतों के अखाड़ों में जाकर दक्षिणा वितरित की गई ।

अर्धकुम्भ में पूज्यश्री के इस अतिविशाल सत्संग समारोह को देखकर जनता को एक बार पुनः उज्जैन के सिंहस्थ की याद आ गई ।

कलकत्ता : पश्चिम बंगाल की राजधानी और भारत के सबसे बड़े शहर कलकत्ता के मोहन बागान मैदान में दिनांक : ७ से १२ फरवरी तक पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में विशाल सत्संग समारोह का आयोजन हुआ । इस अति व्यस्त नगरी में प्रातः व सायंकालीन, दोनों ही धर्मसभाओं में विराट् जनमेदिनी उपस्थित हुई । इस महानगरी के अनेक बुद्धिजीवी श्रोताओं ने ये शब्द कहे कि : "आज तक ऐसा संत हमने कहीं सुना ही नहीं ।"

सभा-मंडप की सजावट तो यहाँ निराली ही थी । परम्परागत तरीके से व्यासपीठ सिंहासन पर बनाई गई थी । पूरा मंडप रंगबिरंगी कीमती झूमरों से सजाया गया था । हावड़ा जूट मिल के प्रबन्धकों व श्रमिकों के आग्रहवश पूज्यश्री ने एक समय का सत्संग उन्हें भी प्रदान किया ।

बंगाल की जनता को सत्संग करते समय पूज्य गुरुदेव श्रीरामकृष्ण लगते, कीर्तन करते समय इनमें उन्हें चैतन्य महाप्रभु का आभास होता तथा ध्यान

कराते समय पूज्यश्री उन्हें आदिकालीन ब्रह्मर्षि नजर आते । कलकत्ता में हजारों लोगों ने पूज्य गुरुदेव से मंत्रदीक्षा प्राप्त कर अपना जीवन धन्य किया ।

भद्रक : (उड़ीसा) भद्रक जिले के चरम्पा गाँव में दिनांक : १४ फरवरी को पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में आदिवासी निर्धनों के लिये विशाल भंडारे एवं सत्संग कार्यक्रम का आयोजन सम्पन्न हुआ ।

दूर देश से आये इस महान संत की दानशीलता तथा भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम को उड़ीसा प्रान्त के भद्रक जिले के निवासियों ने खूब सराहा । अनेक बुद्धिजीवियों ने इस विशाल आयोजन में भाग लिया ।

आश्रम की ओर से निर्धनों में वस्त्र, दक्षिणा, फल इत्यादि वितरित किये गये ।

भीतर ही भीतर अपने आप से पूछो कि : 'ऐसे दिन कब आयेंगे कि देह होते हुए भी मैं अपने को देह से पृथक् अनुभव करूँगा ? ऐसे दिन कब आयेंगे कि एकांत में बैठा बैठा मैं अपने मन-बुद्धि को पृथक् देखते देखते अपने आत्मा में तृप्त होऊँगा ? ऐसे दिन कब आयेंगे कि मैं आत्मानन्द में मस्त रहकर संसार के व्यवहार में निश्चिन्त रहूँगा ? ऐसे मेरे दिन कब आयेंगे कि शत्रु और मित्र के व्यवहार को मैं खेल समझूँगा ?'

ऐसा न सोचो कि 'वे दिन कब आयेंगे कि मेरा प्रमोशन हो जाए, मैं प्रेसिडेन्ट हो जाऊँगा, मैं प्राइम मिनिस्टर हो जाऊँगा ।'

आग लगे ऐसे पदों की वासना को ! ऐसा सोचो कि मैं कब आत्मपद पाऊँगा ? कब प्रभु के साथ एक होऊँगा ?

पूज्यश्री के सत्संग कार्यक्रम

१. पीथमपुर में
दिनांक : ४, ५ मार्च ९५
समय : सुबह ९-३० से ११-३० शाम ३ से ५
स्थान : हाट बाजार मैदान, सेक्टर-१, पीथमपुर, जि. धार (म.प्र.)

२. सिरोही में
दिनांक : ८ मार्च ९५
समय : सुबह ९-३० से १२ शाम ३ से ५
स्थान : सर के. एम. विद्यालय का खेल मैदान, पैलेस रोड़ ।

३. सुमेरपुर (राज.) में वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर
दिनांक : ९ से १२ मार्च ९५
जाहिर सत्संग रोज शाम ४ से ६
स्थान : संत श्री आसारामजी आश्रम, सुमेरपुर, जि. पाली (राज.)

४. सुरत आश्रम में होली का वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर
दिनांक : १५ से १७ मार्च ९५
स्थान : संत श्री आसारामजी आश्रम, जहाँगीरपुरा, वरियाव रोड़, सुरत । फोन : 685341

५. अहमदाबाद आश्रम में चेटीचण्ड का वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर
दिनांक : ३१ मार्च से २ अप्रैल ९५
स्थान : संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-380 005.
फोन : 486310, 486702.

जिसको जीव और जगत मिथ्या लगता है उसके लिए ज्ञानमार्ग है, जिसको सत्य लगता है उसके लिए योगमार्ग और भक्तिमार्ग है ।

कलकत्ता के मोहन बागान ग्राउन्ड पर आयोजित पूज्य गुरुदेव के विराट सत्संग समारोह का दृश्य ।

कलकत्ता के मोहन बागान ग्राउन्ड पर आयोजित पूज्य गुरुदेव के विराट सत्संग समारोह का दृश्य।

प्रकाशा (दक्षिण काशी, महा.) में आयोजित भव्य सत्संग।

धरमपुर (गुज.) में जब विशाल मंडप खचाखच भर गया तो जनता ने मंडप के चारों ओर बैठकर सत्संग श्रवण किया।
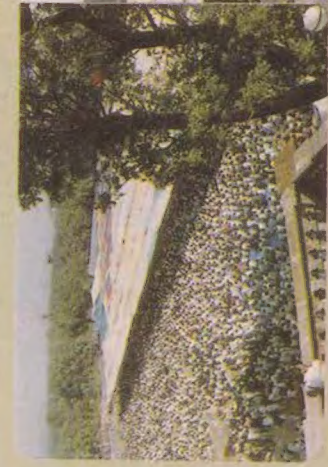
भारत के अनेक गाँव संकीर्तनयात्रा से हरिनाम की प्यालियाँ पीकर आनन्द लूटते हैं।
(ब्राह्मणिया गाँव का दृश्य)

कड़कड़ती ठण्ड हो या कष्टप्रद गर्मी, कोलक (जि. वलसाड़, गुज.) के साधक हरिनाम संकीर्तन यात्रा का अखण्ड व्रत–पालन करते ही हैं।

केन्द्रीय सरकार के खाद उत्पादन संयंत्र (कृभको), सूरत में गुरुदेव के पावन करकमलों से भारत मंदिर की प्रतिमाओं की अनावरण विधि।

नावली (जि. धुले) में आश्रम के साधकों द्वारा कंबल तथा महाप्रसाद का वितरण।
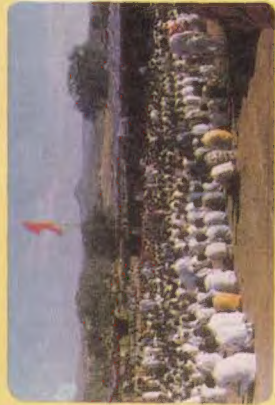
नारी उत्थान आश्रम की साधिकाओं द्वारा खापर (जि. धुले, महा.) में आदिवासियों को अन्न, वस्त्र व दक्षिणा वितरण।

निकल पड़े हैं कोटावासी
गुरुसंदेश सुनाने को।
धर्म ध्वजा को हाथ में लेकर
विश्वशांति फैलाने को॥
(कोटा में हर पूर्णिमा को संकीर्तन प्रभातफेरी)

श्री यो.वे.से. समिति, बालवा (तह. कलोल, गुज.) के साधकों ने विगत दिनों अपंग, अंध, दरिद्र व रोगियों में २८०० किलो अनाज का निःशुल्क वितरण किया।

Registered with Registrar of Newspapers for India Under No. 48873/91